एक
और
हिंदुस्तान

एक और
हिंदुस्तान
कामता नाथ

नेशनल पब्लिशिंग हाउस
(स्वत्वाधिकारी : के० एल० मलिक ऐंड सस प्रा० लि०)
२३, दरियागंज, नयी दिल्ली-११०००२

शाखाएं
चौडा रास्ता, जयपुर
३४, नेताजी सुभाष मार्ग, इलाहाबाद
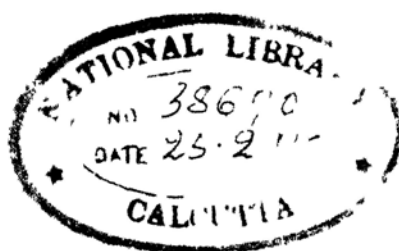
मूल्य : १२.५०
स्वत्वाधिकारी के० एल० मलिक ऐंड संस प्रा० लि० के लिए नेशनल पब्लिशिंग हाउस,
नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित / प्रथम संस्करण १७७७ / सर्वाधिकार : कामता नाथ /
आदर्श प्रिंटिंग सर्विस द्वारा सरस्वती प्रिंटिंग प्रेस, मौजपुर, दिल्ली-११००५३ में मुद्रित।

एक और हिंदुस्तान

रात पुलिस आई थी। कोई डेढ़ बजे होंगे। मैं खाना खाकर बिस्तर पर लेटा पढ़ रहा था। तभी नीचे गली में पुलिस के भारी बूटों की आवाज सुनाई दी। आवाज मेरे मकान के निकट आकर रुक गई। वे गली में रुक-कर आपस में बातें करने लगे थे। पुस्तक अब भी वैसे ही मेरे हाथ में थी। परंतु अब मैंने पढ़ना बंद कर दिया था। उनकी बातों का आभास लेना कठिन था। वे काफी धीरे बोल रहे थे। मैंने अनुमान लगाया वे दो से अधिक हैं। किताब मैंने बिस्तर पर औंधा दी और बालकनी पर आ गया। वे मेरे मकान से कुछ दूर थे। चार थे। उनकी बातें मैं नहीं सुन सका। कुछ देर वे वैसे ही खड़े आपस में फुसफुसाते रहे। उनमें से एक को मैंने गली के बंद सिरे की ओर इशारा करते हुए देखा। फिर वह आगे बढ़कर पाइप में पानी पीने लगा। एक ने मेरे मकान के सामने वाले मकान के चबूतरे पर चढ़ कर दरवाजे पर लगी हुई नेम-प्लेट को पढ़ा। फिर वे चले गए। संभवतः उन्होंने मुझे नहीं देखा।

मैं लौटकर बिस्तर पर लेट गया। शायद कल तक वे रुकेंगे, मैंने सोचा। पुस्तक बंद करके मैंने मेज पर रख दी और बत्ती बुझाकर सो गया।

सुबह कोई छह बजे छोटे भाई ने आकर मुझे जगाया, "नीचे कई पुलिस वाले आए है तुमको बुला रहे हैं।" उसने कहा, "बारह-तेरह हैं। एक सब-इंस्पेक्टर भी है।"

एक क्षण मैंने सोचा। कहा, "कह दो मैं घर में नहीं हूं", और करवट बदलकर फिर सो गया।

सामने छत पर किसी के चलने की आवाज सुनाई दी। मैंने देखा, पुलिस-कांस्टेबुल ऊपर चढ़ आए थे। तीन थे। उनके हाथों में लाठियां थीं मुझे कुछ गुस्सा-सा आया।

"आप लोग यहां कैसे आ गए ?" मैंने कुछ कड़े स्वर में कहा। तभी एक व्यक्ति सादे कपड़ों में ऊपर आ गया।

"आप ही है।" उसने मेरी ओर इशारा किया।

पुलिस वाले कमरे में घुस आए। मैं उठकर बैठ गया। उन्होंने मुझे बांह से पकड़ लिया।

"क्या बात है ?" मैं उठकर खड़ा हो गया।

"नीचे चलिए सब मालूम हो जाएगा।"

"ठीक है, कपड़े पहन लू।" मैंने कहा।

"नहीं, ऐसे ही चलिए।" और वे करीब-करीब घसीटते हुए मुझे सीढ़ियां उतार लाए। गली में सात-आठ पुलिस वाले और थे। उनमें एक या दो सब-इंस्पेक्टर थे।

"आपको अरेस्ट किया जाता है।" एक सब-इंस्पेक्टर ने मुझसे कहा।

छोटा भाई कपड़े ले आया था। मैं नंगे बदन, केवल पट्टे का पाजामा पहने था। दो कांस्टेबुल अब भी मेरे हाथ पकड़े हुए थे।

मां नीचे सोती थीं। अब तक उन्हें पता चल गया था और वह उठकर सामने दहलीज में आ गई थीं। इधर काफी दिनों से उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं चल रहा था।

"आप कपड़े पहन लीजिए।" एक सब-इंस्पेक्टर ने मुझसे कहा।

"कैसे पहनूं ? मेरे हाथ जो इन लोगों ने पकड़ रखे हैं।" मैंने कहा।

उन्होंने हाथ छोड़ दिए। मैंने बनियान और कमीज पहन ली।

उन्होंने फिर मेरे हाथ पकड़ लिए। तब तक गली के दो-चार लोग

और आ गए थे और बात समझने का प्रयत्न कर रहे थे।

"मैं जरा मां से दो मिनट बात करना चाहता हूं।" मैंने कहा।

"यहीं से कर लीजिए।"

"यहां से कैसे कर लूं। आपके सामने यहीं दहलीज तक जाऊंगा। पतलून भी बदलनी है।"

"आप अंदर नहीं जाएंगे।"

मुझे फिर गुस्सा आने लगा था। विशेषकर कांस्टेबुलों पर, जो लाठी लिए मेरे चारों ओर खड़े थे। मुझे पकड़ने के लिए इतने बड़े पुलिस-फोर्स की आवश्यकता होगी, यह मैंने नहीं सोचा था।

"आप अजीब आदमी हैं। मैं आपसे कहता हूं अभी दो मिनट के लिए जाऊंगा। कोई हवा तो नहीं हो जाऊंगा।" मैंने झुंझला कर कहा।

"ले चलो इन्हें।" उसने कांस्टेबुलों को हुक्म दिया। वे मुझे घसीटने लगे।

गली के दो-एक लोगों ने आपत्ति की। परंतु उन्होंने सुना नहीं।

छोटा भाई चप्पल ले आया था। आठ-दस कदम चल लेने के बाद मैंने चप्पलें पहनीं।

वे मुझे काफी तेज चला रहे थे और साथ-साथ सीटी बजाते जा रहे थे। क्यों बजा रहे थे यह मैं नहीं समझ सका। शायद उनका यह तरीका हो कि जब किसी को पकड़कर ले जाते हों तो सीटी बजाते हों, मैंने सोचा।

कुछ दूर चलकर उन्होंने सीटी बजाना बंद कर दिया। परंतु मेरे दोनों हाथ मजबूती से पकड़े रहे।

रास्ते में रेलवे-क्रासिंग का फाटक बंद था। वहां भी उन्होंने अपनी पकड़ ढीली नहीं की। सुबह जल्दी उठकर टहलने वाले कुछ लोग फाटक पर खड़े ट्रेन के गुजरने की प्रतीक्षा कर रहे थे। सब मुझे बड़ी संदिग्ध दृष्टि से देख रहे थे।

पुलिस-चौकी घर से कोई एक फर्लांग दूर थी। वहां लाकर उन्होंने मुझे छोड़ दिया। चौकी के बाहर चबूतरे पर चारपाई पड़ी थी। मैं उस पर बैठ गया और सिगरेट पीने लगा। सिगरेट का पैकेट मेरे पाजामे की जेब में था।

छोटा भाई मेरे पीछे-पीछे पतलून और घड़ी ले आया था। मैंने पाजामा उतार दिया और पतलून पहन ली। घड़ी मैंने उसे वापस कर दी।

सब-इंस्पेक्टर अंदर किसी से टेलीफोन पर बात कर रहा था।

"क्या मैं यहां से फोन कर सकता हूं ?" वह बाहर आया, तो मैंने पूछा।

वह एक क्षण रुका, "फोन ? फोन आपको मैं थाने से करवा दूंगा यहां से ठीक नहीं है।" उसने कहा।

मैं चुप हो गया।

"आपने मुंह-वुंह न धोया हो तो धो लीजिए।" उसने कहा और किसी कांस्टेबुल को लोटे में पानी लाने का आदेश दिया।

"नहीं, मैं मुंह नहीं धोऊंगा।" मैंने कहा।

"चलिए फिर, गाड़ी आ गई होगी।"

"कहां चलना है ?" मैंने पूछा।

"थाने। मैंने टेलीफोन कर दिया है गाड़ी आ गई होगी।"

"अच्छा ! क्या आप मुझे एक कागज का टुकड़ा और कलम दे सकते हैं ?"

उसने अंदर किसी को आवाज लगाई और उससे कागज लाने को कहा।

परंतु मैंने इरादा बदल दिया, "रहने दीजिए।" मैंने कहा। छोटा भाई अभी वहीं खड़ा था, "तुम जाओ।" मैंने उससे कहा, और उठकर उन लोगों के साथ चल दिया।

इस बार केवल दो कांस्टेबुल साथ थे और एक सब-इंस्पेक्टर। कांस्टेबुलों ने फिर मेरे हाथ पकड़ने चाहे परंतु सब-इंस्पेक्टर ने मना कर दिया। हम साथ-साथ चल रहे थे।

"आपने मुझको मां से क्यों नहीं मिलने दिया ?" मैंने पूछा।

"बुरा मत मानिएगा", उसने उत्तर दिया, "मैं जानता हूं आप· शरीफ आदमी हैं लेकिन कितने ही ऐसे वाकिये हो चुके हैं कि मुलजिम अंदर गया और लापता हो गया। दोष हम लोगों को लगता है।"

मुझे पहली बार एहसास हुआ कि मैं इस समय एक मुलजिम हूं।

"आप लोग मकानों में दाखिल हो जाते हैं। अगर कोई उसकी कम्प्लेंट कर दे तो?"

"किया करे।"

"मान लीजिए मैं कह दूं कि आप मेरे मकान से यह-वह सामान उठा लाए।"

"कौन मानेगा? कहना एक बात है, साबित करना दूसरी।"

मैंने नई सिगरेट जला ली, "आप सिगरेट पीते हैं?" मैंने पैकेट उसकी ओर बढ़ा दिया।

"नहीं-नहीं। धन्यवाद!"

पुलिस की वैन सड़क पर खड़ी थी। ड्राइवर ने उतरकर पीछे की टैंक खोल दी।

कांस्टेबुल मुझे पीछे की ओर उस पर चढ़ाने के लिए ले जाने लगे।

"चलो, तुम लोग बैठो। आप इधर आइए।" सब-इंस्पेक्टर ने मुझे बुलाकर ड्राइवर के बगल वाली सीट पर अपने पास बिठा लिया। दोनों कांस्टेबुल पीछे बैठ गए।

थाने पर हम लोग पहुंचे तो थाने की धुलाई हो रही थी। स्टेशन-इंचार्ज शायद अपने कमरे में था।

सब-इंस्पेक्टर ने पोर्टिको में मेज के सामने कुर्सी डलवा दी। कहा, "बैठिये।" मैं बैठ गया। वह स्वयं स्टेशन-इंचार्ज के कमरे में चला गया। मैं बैठा सिगरेट पीता रहा। कांस्टेबुल भी अब कुछ निश्चिंत हो गए थे और इधर-उधर खड़े दूसरे कांस्टेबुलों से बात कर रहे थे।

सब-इंस्पेक्टर थोड़ी देर में बाहर निकल आया और एक कांस्टेबुल से बोला, "ड्राइवर से कह दो अभी जाए नहीं।"

"मुझे क्या करना होगा?" मैंने पूछा।

"आप यहीं बैठिए।" उसने कहा। फिर बोला, "अच्छा आप मेरे साथ आइए।"

मैं उसके साथ बाहर सड़क पर आ गया। वैन अभी सड़क पर खड़ी थी। ड्राइवर अपनी सीट पर बैठा सो रहा था। उसके अच्छी-खासी दाढ़ी थी और वह अलीगढ़ी पाजामा और बिना कालर की कमीज पहने था।

"सो गए मुमताज मियां ?" सब-इंस्पेक्टर ने उसे जगाया।

उसने आंखें खोल दीं।

"हजरतगंज चलने का हुक्म हुआ है।"

"अब आप देख लीजिए, सरकार आदमी का सारा खून निचोड़ लें इनका बस चले तो। मैं अब कहीं नहीं जाऊंगा।"

"चलो तुमको चाय पिला दें।" सब-इंसपेक्टर ने कहा।

"नहीं, मैं चाय नहीं पीऊंगा।"

"अरे भाई, मेरा भी तो वही हाल है। मैं तो परसों रात भी जगा हूं।"

"नहीं, मैं चाय पीता ही नहीं। आपको कहिए तो ला दूं।"

"हां भई, ला दो। बिना चाय के अब नहीं चला जाता। क्या मजाल जो एक मिनट झपकी भी ली हो।"

ड्राइवर चलने लगा तो सब-इंसपेक्टर ने कहा, "एक कप और लेते आना। आप तो चाय पिएंगे न ?" उसने मेरी ओर मुड़कर पूछा।

"हां, पीना तो चाहता हूं।" मैंने कहा।

"आइए बैठ जाइए।" वह ड्राइवर की बगल वाली सीट पर बैठ गया। मैं भी बैठ गया। ड्राइवर चाय ले आया।

चाय पीकर मैंने फिर सिगरेट जला ली, "लीजिए आप पीजिएगा।" मैंने ड्राइवर से पूछा।

"लाइए, पी लूं। वैसे मेरे पास बीड़ी है।" उसने सिगरेट के दो-तीन गहरे कश मारे और गाड़ी स्टार्ट कर दी।

"आप बहुत सिगरेट पीते हैं।" सब-इंस्पेक्टर ने मुझसे कहा।

मैं हंसने लगा।

"सिगरेट बहुत नुकसानदेह चीज है।"

"इस महंगाई के जमाने में और फिर कोई पिए भी क्या ?"

"यह भी आप ठीक कहते हैं।" उसने हामी भरी।

इस बार एक भी कांस्टेबुल हमारे साथ नहीं था।

"रात आपको कैसे जगना पड़ा ?" मैंने सब-इंस्पेक्टर से पूछा।

"एक मुलजिम पकड़ने मालेहाबाद जाना पड़ा।"

"क्या बात थी ?"

"चोर है साला। कई महीनों से फरार था।"

'पकड़ लिया ?"

"हां। उसी को पकड़कर चार बजे लौटा, तो आपके लिए आर्डर मिल गया।"

"आप लोगों की ड्यूटी कितने घंटे की होती है ?"

"ड्यूटी क्या ? चौबीस घंटे का गुलाम समझिए। तीन महीने की मेरी छुट्टी बाकी है। बहन की शादी है अगली अट्ठाइस तारीख को। मगर छुट्टी ही नहीं मिल रही।"

"ओवर-टाइम ?"

"कैसा ओवर-टाइम। यही सब हो जाए तो पुलिस की नौकरी क्यों कहलाए।"

मैं चुप हो गया।

"तो कैसे पकड़ा उस चोर को ?" थोड़ी देर बाद मैंने पूछा।

"अरे पूछिए न ? क्यों मुमताज मियां, क्या हाल है घुटने का ?" वह ड्राइवर की ओर देखकर मुस्कराया।

मुमताज मियां ने आखिरी कश लेकर सिगरेट बाहर फेंक दी, "हाल देखने की फुरसत कहां मिली"। उसने कहा।

"क्या हुआ घुटने में, ड्राइवर साहब ?" मैंने पूछा।

"इन्होंने ही दौड़कर पकड़ा। नहीं तो निकल गया था साला। उसी दौड़ने में बेचारे गिर पड़े।" सब-इंस्पेक्टर को हंसी आ गई, "क्या नाला था मुमताज मियां ?"

"नाला क्या, अंधेरे में कुछ दिखाई ही नहीं दिया। और फिर घास इतनी बड़ी-बड़ी थी कि वह तो उसकी कमीज पकड़ में आ गई, नहीं तो निकल जाता। पिए न होता तो पकड़ में न आता।"

जोर से स्टीयरिंग घुमाकर ड्राइवर ने गाड़ी थाने के अहाते में मोड़

दी और फव्वारे की बगल से घुमाकर बरांडे के सामने लाकर खड़ी कर दी।

सब-इंस्पेक्टर के साथ ही मैं भी नीचे उतरकर थाने के अंदर आ गया। बाएं हाथ पर स्टेशन-इंचार्ज का कमरा था, जिसमें चिक पड़ी थी। दाहिने हाथ पर आफिस था। हम आफिस में आ गए। बैंक की तरह का एक काउंटर कमरे को दो हिस्सों में बांटता था। काउंटर के पीछे बाएं हिस्से में कुछ तखत और उस पर छोटी-छोटी दो डेस्कें पड़ी थीं। एक कांस्टेबुल काउंटर पर खड़ा टेलीफोन पर बात कर रहा था। सामने वाले हिस्से में एक लंबी मेज पड़ी थी, जिसके दोनों ओर बेंचें थीं। मुझे बेंच पर बैठने को कहकर सब-इंस्पेक्टर सामने वाली दूसरी बेंच पर बैठ गया।

टेलीफोन पर जो कांस्टेबुल बात कर रहा था, बात करते-करते ही उसने सब-इंस्पेक्टर को हाथ उठाकर सलाम किया। जब उसने टेलीफोन रख दिया तो सब-इंस्पेक्टर ने उससे पूछा, "दरोगा साहब उठ गए ?"

"अभी नहीं। आते ही होंगे।" उसने उत्तर दिया।

मैंने नई सिगरेट जला ली।

इक्का-दुक्का करके कांस्टेबुल कमरे में आ-जा रहे थे।

"क्या मैं यहां से टेलीफोन कर सकता हूं ?" मैंने सब-इंस्पेक्टर से पूछा।

उसने कांस्टेबुल से कहा, "यह टेलीफोन करना चाहते हैं। यहां से इजाजत है ?"

"बिलकुल नहीं।"

मैं चुप हो गया। एक सब-इंस्पेक्टर और आ गया था और अब दोनों आपस में बातें कर रहे थे और सरकार की बुराई कर रहे थे।

"मैं पेशाब करने जाना चाहता हूं।" मैंने कहा।

"अंदर चले जाइए।" उसने कहा। फिर बोला, "अच्छा रुकिए। अरे कोई है ?" उसने आवाज दी।

एक कांस्टेबुल आकर खड़ा हो गया।

"जरा इनको पेशाब करा लाओ अंदर।"

मैं उसके साथ चला गया। अंदर बड़ा-सा आंगन था। उसी के एक कोने में पेशाब-घर बना था। मैं पेशाब कर रहा था तो कांस्टेबुल मुझसे कोई एक-डेढ़ गज की दूरी पर खड़ा था। पेशाब करने के बाद वहीं पास में लगे पाइप पर मैंने हाथ-मुंह धोया। वापस आने लगा तो बरांडे में मुझे किसी की आवाज सुनाई दी, "आदाबर्ज़ है।"

मैंने देखा, लोहे के सींखचों के पीछे हवालात की कोठरी में रशीद और जयसिंह बैठे थे।

"तुम लोग कब आए?" मैं उधर बढ़ गया।

"आप यहां बात नहीं कर सकते।" कांस्टेबुल ने मुझे वहां रुकने से मना किया।

"सिगरेट देते जाइए।" रशीद ने कहा।

मैंने जलती हुई सिगरेट सींखचों के अंदर फेंक दी।

लौटकर मैं फिर बेंच पर बैठ गया।

इसके मायने हैं कि और लोग भी पकड़े गए हैं, मैंने सोचा। पता नहीं, प्रभात पकड़ा गया या नहीं?

तभी स्टेशन-इंचार्ज ने कमरे में प्रवेश किया। वह नहा कर आया था और बुश्शर्ट के बटन बंद कर रहा था। बटन बंद करके उसने उसकी बेल्ट बांधी।

दोनों सब-इंस्पेक्टर और कांस्टेबुल उसके आने पर खड़े हो गए। मैं भी खड़ा हो गया। उसने एक दृष्टि चारों ओर घुमाई। मुझ पर उसकी दृष्टि आकर रुक गई।

कुछ क्षण वह मुझे घूरता रहा। तब वापस चला गया। सब-इंस्पेक्टर आदि दुबारा बैठ गए।

रशीद का छोटा भाई दिखाई दिया। उसने मुझे आदाब किया और पूछा, "आप कैसे आए?"

"वैसे ही।"

"भाई जान को रात दो बजे पकड़ लिया है।"

"मुझे मालूम है।"

तभी किसी कांस्टेबुल ने उसे बाहर भगा दिया।

मैं चुपचाप बैठा सिगरेट पीता रहा।

बाहर कोई वैन आकर रुकी। मैं बरांडे की तरफ देखने लगा। प्रभात और मित्तर चले आ रहे हैं। प्रभात ने मुंह पर मफलर की तरह तौलिया लपेट रखा था। मित्तर ने धोती से मुंह ढंक रखा था। दोनों के हाथों में हथकड़ी थीं। प्रभात ने मुझे देखा। परंतु वे रुके नहीं, अंदर चले गए। शायद इनको भी हवालात में बंद करेंगे। मुझे यहां क्यों बिठा रखा है। मैं सोचने लगा। मेरे हथकड़ी क्यों नहीं डाली?

तभी गौतम आ गया। वह कमरे के पीछे बरांडे में खड़ा था।

"तुम भी आ गए?" मैंने पूछा।

"उसकी मेहरबानी है।" उसने छत की ओर हाथ उठाते हुए कहा।

सहसा टेलीफोन की घंटी बज उठी। एक कांस्टेबुल ने उसे उठाया, "जी हां, हुजूर, हैं। अभी बुलाता हूं। अभी बुलाया।" उसने टेलीफोन का रिसीवर अलग रख दिया और किसी को बुलाने चला गया।

स्टेशन-इंचार्ज झटपता हुआ अंदर आया और फोन उठाकर बात करने लगा।

"जय हिंद, सर! यस सर! अभी इंतजाम करता हूं।" एक सेकेंड उसने रिसीवर की मुंह की तरफ वाले चोंगे पर हथेली रखकर उसे मुंह से हटा लिया। फिर बड़ी जोर से बिगड़ा, "यहां से हटाओ सबको, निकालो बाहर। यह बरांडे में कौन खड़ा है? (रशीद का भाई था) फौरन कमरा खाली करो। इनको सामने कमरे में बिठाओ, उसने मेरे लिए कहा।"

मैं सब-इंस्पेक्टर के साथ उठकर बाहर आ गया। उसने मुझे सामने वाले कमरे में बिठा दिया। वह एक बहुत छोटा कमरा था। एक छोटी-सी मेज और तीन कुर्सियां। एक कुर्सी पर कोई पहले से बैठा था। मैं दूसरी पर बैठ गया।

स्टेशन-इंचार्ज को टेलीफोन पर जोर-जोर से बोलते सुनता रहा। परंतु वह क्या कह रहा था यह समझ में नहीं आया। मित्तर और प्रभात को हवालात में बंद कर दिया गया। मुझे क्यों अलग बिठा रखा है? गौतम कहां है? मैं सोचने लगा।

एक कांस्टेबुल मुझे दो पैकेट सिगरेट दे गया, "आपके छोटे भाई ने दी है।" उसने कहा। मैंने सिगरेट ले लीं, तभी दरोगा कमरे से बाहर निकला। उसका मूड बहुत बिगड़ा हुआ था और वह जिस-तिस पर बिगड़ रहा था।

"चलिए, ले चलिए इन सबको यहां से।" वह कह रहा था।

मेरे सब-इंस्पेक्टर ने मुझे बुलाया। मित्तर और प्रभात भी बाहर खड़े थे। उनके हाथों में अब भी हथकड़ियां थीं। हवालात का फाटक खोला जा रहा था। रशीद और जयसिंह बाहर निकले। सामने वैन खड़ी थी।

हम सबको उसके पीछे बिठा दिया गया। कुछ कांस्टेबुल और दो-तीन सब-इंस्पेक्टर भी बैठे।

"तुम इधर सुनो, राजनाथ।" स्टेशन-इंचार्ज ने मेरे साथ वाले सब-इंस्पेक्टर को बुलाकर कुछ कहा। सब-इंस्पेक्टर लौटकर ड्राइवर की बगल में बैठ गया।

"हम लोग कहां जा रहे हैं?" मैंने एक कांस्टेबुल से पूछा। उसने कोई उत्तर न दिया।

मैंने देखा, मेरा भाई थाने के फाटक से लगा खड़ा था।

गाड़ी स्टार्ट होकर सड़क पर आ गई थी। कोई नौ-सवा नौ का समय रहा होगा। दुकानें खुलने लगी थीं। हम सड़क पर आने-जाने वालों को देख रहे थे। कोई परिचित चेहरा हमको नहीं दिखा।

"तुमको कितने बजे पकड़ा?" मैंने प्रभात से पूछा।

"पांच बजे।" उसने संक्षिप्त-सा उत्तर दिया।

मैं चुप हो गया।

"तुम्हारे पास सिगरेट है?" प्रभात ने पूछा।

मैंने पैकेट उसकी ओर बढ़ा दिया।

उसके हाथ में हथकड़ी थी। "जला कर दे दो।" उसने कहा।

"आप लोग बात मत कीजिए।" किसी कांस्टेबुल ने हमें कहा।

मैंने सिगरेट जलाकर प्रभात को दे दी और चुप हो गया। वह बाएं हाथ से सिगरेट पीने लगा। उसका दाहिना हाथ मित्तर के बाएं हाथ के साथ हथकड़ी में फंसा था।

रशीद ने मुझे होंठ पर उंगलियां रखकर सिगरेट के लिए इशारा किया। एक सिगरेट मैंने उसे भी दे दी।

हम सब चुप थे और सड़क से अनुमान लगा रहे थे कि हम कहां जा रहे हैं। पहले मुझे शक हुआ कि शायद हमें कोर्ट ले जा रहे हैं। परंतु गाड़ी विपरीत रास्ते पर आ गई थी।

हमें स्टेशन की बिल्डिंग पीछे छूटती दिखाई दी।

"हम कहां जा रहे हैं ?" मैंने फिर बगल में बैठे कांस्टेबुल से प्रश्न किया।

"मुझे नहीं मालूम।" उसने कहा।

थोड़ी देर में गाड़ी एक बड़े से फाटक के अंदर एक बड़े आहते में आकर रुक गई। हमें गाड़ी से उतरने को कहा गया। बारी-बारी से हम गाड़ी से उतर आए। प्रभात और मित्तर को उतरने में कठिनाई हुई। दोनों के एक-एक हाथ आपस में बंधे जो थे।

हमने देखा, यह भी एक थाना था। आलम बाग। मेन शहर से कुछ दूर। यहां काफी खुली जगह थी। काफी बड़ा मैदान था जिसमें आम के दो-एक पेड़ लगे थे, जिनमें कच्ची अमियां लटक रही थीं।

कोई आफिसर एक पेड़ के नीचे मेज डाले कुर्सी पर बैठा था। सामने तिपाई पर दो-तीन आदमी बैठे थे। एक बूढ़ी स्त्री बार-बार उसके सामने हाथ जोड़ रही थी और बीच-बीच में आंचल से आंसू पोंछती जा रही थी। आफिसर उसकी ओर बिना कुछ ध्यान दिए सामने रजिस्टर में कुछ लिखता जा रहा था।

' हमें यहां क्यों ले आया गया ?" मित्तर ने पूछा।

"मुझे नहीं मालूम।" मैंने कहा।

सब-इंस्पेक्टर ने किसी कांस्टेबुल को बुलाकर हाते के एक बरांडे में एक कंबल बिछाने को कहा। फिर हम लोगों से बोला," आप लोग यहां बैठिए।"

"मैं लैट्रिन जाना चाहता हूं।" मैंने कहा।

"अभी आप वहां बैठिए। यह घर नहीं है।" उसने उत्तर दिया।

हम सब बरांडे में आ गए और उस कंबल पर बैठ गए।

"कम्बल चुभ रहा है।" मित्तर ने कहा।

मैंने सिगरेट निकाल ली थी। एक प्रभात और रशीद को भी दी। जयसिंह भी मांगने लगा। एक उसे भी दी मैंने।

तब तक मुझे राजनाथ सिंह दिखाई दे गया। मैं उठकर उसके पास चला गया। मैं लैट्रिन जाना चाहता हूं। मैंने कहा।

"अच्छा, अभी इंतजाम करवाता हूं।" उसने कहा।

मैं वापस बरांडे में आ गया।

उसने हवालात में बनी लैट्रिन में पानी का प्रबंध कराया। फिर मुझसे आकर बोला, "जाइए, यहां तो यही है।"

हवालात के कोने में ही लैट्रिन बनी थी।

वहां से लौटकर मैंने राजनाथ सिंह से पूछा, "क्या पाइप पर मैं हाथ धो सकता हूं।"

"हां, हां।" उसने कहा। फिर किसी कांस्टेबुल को आवाज दी—जाओ, जरा इनके हाथ धुलवा दो।

"मैं धोलूंगा।" मैंने कहा।

पाइप पर मैंने दुबारा हाथ-मुंह धोया। वहां से लौट रहा था तो देखा वह बूढी स्त्री उस आफिसर के जूतों पर सिर रख रही थी।

"अरे कोई है? सब साले मर गए हैं। वह चिल्ला रहा था—निकालो इस बुढ़िया को यहां से। दिमाग चाट गई।"

बुढ़िया फिर भी हाथ जोड़े जा रही थी।

मेरे लौट आने के बाद प्रभात भी लैट्रिन गया। उतनी देर के लिए उसकी हथकड़ी खोल दी गई। लौटकर आया तो फिर उसके हथकड़ी डाल दी गई।

"तुम दोनों बड़े मुल्जिम हो।" मैंने प्रभात और मित्तर से मजाक किया।

प्रभात हंसने लगा। मित्तर कंबल पर लेट गया था। वह सुस्त लग रहा था।

"क्या बात है?" मैंने उससे पूछा।

उसने हाथ के इशारे से मुझे चुप रहने को कहा और प्रभात के कंधे

से तौलिया लेकर सिर के नीचे रख ली। आंखें उसने बंद कर ली थीं।

"इसको क्या हो गया है।" मैंने प्रभात से पूछा।

"बहुत नर्वस है।" प्रभात ने मेरे कान में कहा।

"क्या बात है?" मैंने मित्तर का हाथ हिलाया, "डर रहे हो क्या?"

उसने मेरी हथेली अपने सीने पर रख ली, "मुझे पल्पीटेशन हो रहा है।" उसने कहा। मैंने उसके हृदय की गति और नब्ज देखी। दोनों नार्मल थे।

"तुम बिलकुल ठीक हो।" मैंने कहा।

वह थोड़ी देर चुप रहा फिर उठकर बैठ गया, "अभी हम लोगों को मार पड़ेगी।" उसने कहा।

"क्यों?" मैंने पूछा।

"और यहां किस लिए लाए हैं?"

"वहां नहीं पीट सकते थे?"

"वहां लोगों को पता चल जाता।"

"मार से डरते हो क्या?" मैंने पूछा।

'नहीं।"

"फिर क्या बात है?"

"वैसे ही।"

"अब जो होगा उसे फेस करो। तुम तो राणा प्रताप के वंशज हो।" प्रभात ने कहा।

मित्तर हंसने लगा। वह आर० एस० एस० में काम करता था और हम लोगों को कम्युनिस्ट कहा करता था।

एक छोटा लड़का एक छीके में छह गिलास चाय ले आया।

"किसने भेजी?" मैंने पूछा।

उसने आफिस की ओर इशारा किया।

"यह किसने भेजी?" प्रभात ने मुझसे पूछा।

"शायद मेरे साथ जो सब-इंसपेक्टर है, उसने भेजी होगी। शुरू से मेरा बड़ा ख्याल रख रहा है। खाली घर से पकड़ते समय घसीटकर सीटी बजाते हुए ले गया था।"

"क्यों ? खातिर क्यों कर रहा है ?"

"पता नहीं। हो सकता है मुझे ज्यादा मार लगनी होइ सीलिए रहम कर रहा हो।"

हम दोनों हंसने लगे।

मित्तर फिर लेट गया था। मैंने देखा, उसका हाथ कुछ कांप रहा था।

"इसको हो क्या गया है ?" मैंने प्रभात से पूछा।

"बहुत डरा हुआ है। हवालात में बंद था तो रो रहा था।" प्रभात ने बताया। सबने एक-एक गिलास चाय ले ली थी।

"लो चाय पी लो।" मैंने मित्तर से कहा।

"नहीं, मैं चाय नहीं पीता। उसने हाथ के इशारे से मना कर दिया।

दूध मंगवा दूं साहब के लिए।" गौतम ने कहा।

उसने आंखें खोलकर गौतम की ओर देखा। बोला कुछ नहीं।

"देखो, अगर तुम समझते हो कि बीमारी का बहाना करके मार खाने से बच जाओगे तो गलत-फहमी में हो।" मैंने कहा।

उसने फिर दांत निकाल दिए।

"लो चाय पी लो।"

"अच्छा सिर्फ आधा गिलास दो।"

आधा गिलास मैंने प्रभात के गिलास में उंडल दिया। आधा वह उठाकर पीने लगा।

"हाथ में लगती है।" उसने हथकड़ी के लिए कहा।

"लोहे की है।" गौतम बोला।

हम हंसने लगे।

एक वैन पेड़ के नीचे आकर रुकी। छह आदमी उससे उतरे। दो को हम पहचानते थे। एक हजरतगंज का स्टेशन-इंचार्ज था। दूसरा कांग्रेसी एम० एल० ए०।

"यह लोग यहां क्यों आए हैं ?" मित्तर ने पूछा।

"फिकर मत करो, इनमें से किसी के पास हंटर नहीं है।" मैंने कहा।

वे बरांडे के सामने आकर खड़े हो गए और हम लोगों की ओर देखने लगे। आपस में कुछ बात भी कर रहे थे जो इतने धीमे स्वर में थी कि हम सुन नहीं पा रहे थे।

एम० एल० ए० ने आगे बढ़कर हम लोगों को निकट से देखा।

"नमस्कार।" मैंने और मित्तर ने एक साथ उससे कहा।

"नमस्कार। आप लोग यहां कैसे?" उसने बड़े भोलेपन से पूछा।

"आपकी मेहरबानी है।" प्रभात ने कहा।

"मेरी?" उसने इस प्रकार कहा जैसे हम लोगों के यहां होने से उसका कोई संबंध ही न हो।

हम लोगों को देखने के पश्चात् वे हटकर पेड़ के नीचे खड़े हो गए और आपस में बात करने लगे।

कुछ ही क्षण ये वहां और रुके तब वे वैन में बैठकर चले गए।

"यह शायद हम लोगों को पहचानने के लिए लाए गए थे।" मैंने कहा।

"मुझे भी यही लगता है। यह सब गवाह होंगे", प्रभात ने कहा।

"गवाह?"

"हां। हम लोगों की आइडेंटीफिकेशन होगी।"

"आइडेंटीफिकेशन?"

"तभी तो हमें मुंह ढककर लाए हैं।"

"लेकिन मुझसे तो मुंह ढंकने को नहीं कहा।"

"न कहा होगा।"

"तो क्या सबकी आइडेंटीफिकेशन होगी?"

"पता नहीं।"

"अच्छा दादा, तो मुंह ढककर इसलिए लाए हैं!" मित्तर ने कहा।

"हां।"

'तुम क्या समझे थे?" मैंने पूछा।

"ताकि बदनामी न हो मुहल्ले में?" गौतम बीच में बोल पड़ा।

मित्तर ने उसे घूरकर देखा।

"तुमको कितने बजे पकड़ा? मैंने" मित्तर से पूछा।

"दो बजे।"

"दो बजे ?"

"हां। पिक्चर देखकर लौटा था,
था।"

"पत्नी के साथ गए थे ?"

"हां।"

"कौन-सी पिक्चर देखी ?"

"वक्त।"

"वक्त ? कैसी है ?"

क्या बताऊं, श्रीवास्तव जी। 'वक्त' देखकर लौटा और ऐसा वक्त बदला है कि बस !

"तुम इतना घबराए हुए क्यों हो ?"

वह चुप हो गया और कुछ सोचने लगा।

"एक कार आकर अहाते में रुकी। सभी सब-इंसपेक्टर आदि उठकर खड़े हो गए।"

एक व्यक्ति कार से उतरा और मेज के सामने पड़ी कुर्सी पर आकर बैठ गया। हम लोगों को दुबारा वैन में बैठने को कहा गया। हम आकर वैन में बैठ गए।

"आप लोगों के पास रूमाल वगैरह हो तो मुंह ढक लीजिए।" एक सब इंसपेक्टर ने कहा।

मित्तर ने मुंह पर धोती लपेट ली। प्रभात ने तौलिया रख लिया। शेष लोगों ने रूमाल निकाल लिए।

"यह सक्सेना मजिस्ट्रेट हैं।" गौतम ने कहा।

"तुम पहचानते हो ?"

"जी हां। देख लीजिएगा अभी। हम लोगों को अब कोर्ट थोड़े ले जाएंगे। कोर्ट यहीं बुला ली गई है।"

तभी एक स्कूटर पर किसी के साथ जतिन आ गया। साइकिल पर बोस, रशीद का भाई और दो-एक लोग और थे।

जतिन ने मजिस्ट्रेट को नमस्कार किया और उसके सामने वाली कुर्सी

पर बैठ गया।

"दादा जतिन हैं।" मित्तर ने प्रभात से कहा।

"अच्छा!" प्रभात ने कहा।

हमें बारी-बारी से मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया। पहले प्रभात गया वह मुंह पर तौलिया लपेटे था। हथकड़ी अब खोल दी गई थी। बाकी लोग वैन में बैठे रहे।

हमने देखा, प्रभात ने जतिन से कुछ कहा। इस पर जतिन ने मजिस्ट्रेट से कुछ कहा। वह काफी जोर-जोर से बोल रहा था। मजिस्ट्रेट ने उसकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया और कोई कागज प्रभात को दे दिया। प्रभात लौट आया।

मित्तर गया।

"क्या बात थी?" मैंने प्रभात से पूछा।

"मैंने कंप्लेंट की कि गवाहों को बुलाकर हमें पहचनवाया गया है।"

"क्या कहा उसने?"

"मजिस्ट्रेट ने कंप्लेंट लिखने से इंकार कर दिया।"

मित्तर लौट आया। वह बहुत जल्दी लौट आया था।

मुझे जाने को कहा गया।

"तुम भी कहना। प्रभात ने कहा।"

"मैंने भी मजिस्ट्रेट से जाकर यही बात कही।"

जतिन कुछ जोश से बोला, "आप अक्यूज्ड की कंप्लेंट नोटकर लीजिए यह सब लोग कह रहे हैं···।"

मजिस्ट्रेट मेरा नाम, पिता का नाम आदि पूछता रहा।

"साहब आप इनकी कंप्लेंट पर तो गौर कीजिए। जतिन ने कहा।"

"इनसे कहिए कागज पर लिखकर दें।" और उसने दूसरा नाम पुकार लिया। मैं रुका रहा। जतिन ने एक शीट कागज मुझे दे दिया।

"इन्हें ले जाइए।" मजिस्ट्रेट ने कहा।

कांस्टेबुल मुझे वापस वैन में ले आया।

कागज मेरे पास था।

"किसी के पास कलम है?" मैंने पूछा।

गौतम के पास था। परंतु उसमें इंक नहीं थी। तब तक बोस वैन के पास आ गया था उसने अपना कलम मेरी ओर बढ़ा दिया।

मैं कंप्लेंट लिखने लगा।

"क्या लिख रहे हो ?" प्रभात ने पूछा।

"मजिस्ट्रेट ने कहा है लिख कर दो।"

मित्तर कागज में झांकने लगा।

मैंने जल्दी-जल्दी कंप्लेंट लिखी। तब तक सब की पेशी हो चुकी थी। वैन स्टार्ट हो गई।

"अरे जरा रुकिए ड्राइवर साहब।" मित्तर ने कहा।

मैंने जल्दी-जल्दी सबके हस्ताक्षर लिए। तब तक गाड़ी सड़क पर आ चुकी थी। मैं कागज हाथ में लिए रह गया।

"अभी शायद बोस आता हो। उसे दे देना।" प्रभात ने कहा।

परंतु बोस नहीं आया।

हमें जेल ले आया गया। तेरह दिन की रिमांड हमें दी गई थी।

हमारे जेल के अंदर आते ही फाटक दुबारा बंद कर दिया गया।

"सिगरेट वगैरह तो है, श्रीवास्तव साहब ?" राजनाथ सिंह ने बाहर से ही पूछा।

"जी हां। धन्यवाद !" मैंने कहा।

"हम सब बेकसूर हैं।" मित्तर बोल पड़ा।

"तुम अहमक हो।" प्रभात ने उससे कहा।

वह प्रभात का मुंह ताकने लगा।

"जेल में आने के बाद वह तुम्हारी क्या मदद कर देगा। वह भी तो किसी का नौकर है।

मित्तर चुप हो गया।

जेल के बाहरी रजिस्टर में हमारे नाम-पते लिखे गए।

"आपके पास जमा करने वाली कोई चीज तो नहीं है ?" जेल के कांस्टेबुल ने हमसे पूछा।

"जमा करने वाली क्या ?" हमने पूछा।

"घड़ी अंगूठी, कैश वगैरह।"

"नहीं।"

"मेरे पास तांबे की एक अंगूठी है।" रशीद ने कहा और हाथ उसकी ओर बढ़ा दिया।

"इसको आप पहने रहिए। कहां जमा करेंगे ?" मेरा मतलब कोई कीमती चीज हो तो जमा करा दीजिए। यहां से जाते समय वापस हो जाएगी।

"कपड़े कहां जमा होंगे ?" गौतम ने पूछा।

"कपड़े ?" वह हंसने लगा।

"हम लोग यही पहने रहेंगे ?"

"आप लोग तो अभी हवालाती हैं।"

"हवालाती ?" मित्तर चौंका।

"अंडर-ट्रायल।" प्रभात ने कहा।

हमें जेल के अंदर ले आया गया। अब तक हम चार फाटक पार कर चुके थे। यहां काफी खुला हुआ मैदान था। एक बरांडे में हमें लाकर बिठा दिया गया, जिसके एक सिरे पर एक कोठरी थी। उसमें कुर्सी-मेज वगैरह दिखाई दे रही थी। बरांडे में भी एक कुर्सी और एक मेज पड़ी थी जिसके ऊपर एक रजिस्टर रखा था। सामने नीम के दो-तीन दरख्त लगे थे।

चपरासी हमें यहां छोड़कर चला गया—आप लोग यहीं रुको उसने कहा।

दूसरे कोने में दो व्यक्ति, एक काफी बूढ़ा और एक जवान, बैठे बात कर रहे थे। जवान व्यक्ति बार-बार हम लोगों की तरफ देख रहा था।

"यह आदमी तुम्हें घूर रहा है"। प्रभात ने कहा।

"कौन ?" मैंने उसकी ओर देखा।

उसने हाथ उठाकर मुझे नमस्कार किया।

मैंने उसके नमस्कार का उत्तर दे दिया। परंतु उसे पहचान नहीं सका। वह मेरे पास आ गया।

मैंने देखा वह संतू था। मर्डर केस में वह यहां आजीवन कारावास काट

रहा था। मेरे मुहल्ले का ही था।

"आप यहां कैसे ?" उसने पूछा।

"वैसे ही स्ट्राइक-विस्ट्राइक के चक्कर में। यह सब मेरे साथी हैं।" मैंने कहा।

उसने सब की ओर देखा। फिर बोला-आपको बी० क्लास मिली होगी।

"मुझे नहीं मालूम।" मैंने कहा।

"मजिस्ट्रेट के सामने आपने दरख्वास्त नहीं दी।"

"नहीं।"

"तो यहां से भेज दीजिएगा। नहीं तो साले साधारण कैदियों के साथ बंद कर देंगे।"

"अच्छा।" मैंने कहा।

"कैसे दरख्वास्त देनी होगी ?" मित्तर ने पूछा।

"अभी वर्मा जी आते होंगे मैं उनसे कह दूंगा।"

"कौने वर्मा ?"

"मुलाकात कराते हैं वही यहां रजिस्टर में नोट करेंगे।"

"रजिस्टर में तो बाहर नोट हो गया है।"

"यहां फिर नोट होगा।"

हम चुप हो गए।

वह सज्जन कौन हैं ? उस बूढ़े व्यक्ति के बारे में मैंने पूछा।

"मेरे पिता जी हैं। मिलने आए हैं।"

"अच्छा।"

तब तक वर्मा जी आ गए। नाटेकद के गोरे आदमी थे.

"इन लोगों को जरा अच्छी जगह भेजिएगा।" संतू ने उनसे कहा, "मेरे आदमी हैं और इनसे बी० क्लास के लिए दरख्वास्त दिलवा दीजिएगा।"

"तुम्हारे आदमी हैं फिर क्या बात है। फिर जहां कहो वहां भेज दूं।" वर्मा ने कहा।

"कहीं अच्छी जगह भेजिएगा। चोर-बदमाशों के साथ न कर दीजिएगा।" संतू ने कहा।

"और हुक्म ?"

"बस और हुक्म बाद में होगा।"

वर्मा जी के ऊपर उसका रोब देख कर मुझे आश्चर्य हुआ।

"अच्छा चल रहा हूं।" कोई तकलीफ हो तो मुझे बताना। मैं बी० क्लास में हूँ। अस्पताल की बगल में। चले आना नही तो मैं खुद मिल लूगा। संतू ने मुझसे कहा।

"बहुत-बहुत धन्यवाद, भाई साहब।" मित्तर ने कहा।

"खरबूजा खाओ तो लो।" उसने कहा। मैंने देखा, दीवाल के सहारे चार-छह खरबूजे रखे थे।

"नहीं, धन्यवाद !" मैंने कहा।

उसने दो खरबूजे उठा कर वर्मा जी की मेज पर रख दिये—यह लीजिए आपका हिस्सा।

वर्मा ने दात निकाल दिए। हम लोगो की इन्ट्री करके उसने आवाज लगाई-नंबरदार।

पीले कपडे पहने और लाल टोपी लगाए। एक चपरासीनुमा व्यक्ति उसकी आवाज सुनकर आ गया।

"देखो, इन लोगों को ले जाओ और स्टोर से सामान दिलवा कर इन्हें दो नबर में पहुँचा दो।" वर्मा ने कहा

'दो नम्बर अच्छा तो है ?" प्रभात ने पूछा।

"हां, हां, जाइए तो। बहुत अच्छा है। खुले में सोने को मिलेगा आपको।"

"वेरी गुड, मेनी-मेनी थैंक्स।" गौतम बोला। वह अंग्रेजी कम जानता था।

हम नंबदार के पीछे-पीछे चल दिए। वह हमें एक बगीचे में ले आया। सामने कोठरियां बनी थीं, जिनके सामने बरांडा था।

"आइए-आइए। सबके सब नेता लोग आ गए।"

मोतीलाल था। हम लोगों के साथ पहले काम कर चुका था। दफ्तर से चोरी करने में पकड़ा गया था। वह भी नंबरदार बना था और पीले कपड़ों पर लाल टोपी लगाए था।

उसने हमें बरांडे में बिठाया। जेब से सिगरेट निकालकर पिलाई।

"कैसे आ गए सब के सब ?" उसने पूछा।

"स्ट्राइक पर थे हम लोग। उसी चक्कर में गेट के चौकीदार से कुछ लोगों का झगड़ा हो गया। मार-पीट हो गई। एक एम० एल० ए० साहब बीच में पड़े, उनका कुर्ता-वुर्ता फट गया। वही झंझट है।" प्रभात ने बताया।

"यही सब तो करेंगे आप लोग। उसने कहा। भेजा कहां आप लोगों को ?"

"दो नंबर में। कैसा है ?"

'बड़ा अच्छा है। चुपचाप चले आइए। सब गन्ने वाले बंद हैं वहां।"

"गन्ने वाले ?"

"हां, वह क्या है गन्ना कामदार-संघ। अनशनकारी हैं। खूब आजादी है। बाहर सोने को मिलेगा।"

"यहां क्यों भेजा फिर हमें ?"

"यहां से सामान मिलेगा।"

"क्या सामान ?"

"अभी देख लीजिएगा।" उसने कहा। फिर किसी को आवाज दी, "अरे नत्था, कहां गया। जरा साहब लोगों को नए कंबल निकाल कर दे। बारह। छह हैं न आप लोग ? और तमला-कटोरी निकाल। अच्छी, छांट-छांट कर। फूटी न हो एक भी। और चादर देख वहां बक्से से निकाल ला।"

"यह सब क्या होगा ?"

"खाटें बिछाएंगे क्या ?"

"यह जेल मैनुअल है।" गौतम बोला। उसी तसले में खाओ, उसी में पाखाना जाओ।

"तुम पहले भी आ चुके हो ?" रशीद बोला।

"फादर !" अब तुम ऐसा कहो। वह सीने पर क्रास बनाने लगा। रशीद आयु में काफी बड़ा था और गौतम उसे मजाक में फादर कहा करता था।

."नश्था सब सामान ले आया।"

"तुम क्या इंचार्ज हो ?" प्रभात ने पूछा।

"जी हां।" उसने बनावटी रोब झाड़ा।

सारा सामान रजिस्टर मे चढाकर उसने हम लोगों के हस्ताक्षर लिए। अभी एक-एक घड़ा, चटाई और पंखा भी मिलेगा। मैं बाद में दे जाऊंगा।

"तुम भी नंबरदार हो क्या ?" मित्तर ने पूछा।

"जी हां।"

"यह नंबरदार क्या होता है ?"

"पुराने कैदियों को, जिनका चालचलन अच्छा रहता है, उन्हें नंबरदार बना देते हैं।"

"इससे कैद मे कुछ छूट भी मिलती है ?"

"छूट तो करीब-करीब सभी को कुछ-न-कुछ मिल जाती है।"

सामान लेकर पुराने नंबरदार के साथ हम फिर चल दिए।

पहले हमने एक काफी बड़े फाटक को पार किया जिससे मिला हुआ एक लंबा रास्ता था। रास्ते के दोनों ओर ऊंची-ऊंची दीवाल थी जिस पर गलत हिंदी में उपदेशात्मक वाक्य लिखे थे, जैसे—अपने रहने के स्थाम के साफ-साफ रखो। धर्म और अहिंसा के मार्ग पर चलना मनुष्य का परम कर्तव्य है, आदि-आदि। रास्ता समाप्त होने पर एक और फाटक था। इसके बाद एक वृत्ताकार भूभाग था जिसके बीच में खपरैल की छत वाली हटनुमा एक बिल्डिंग थी। फाटक के निकट ही वर्षा से बचने के लिए एक बरसाती बनी थी जिसमें एक चौकीदार बैठा किसी रजिस्टर के पन्ने उलट रहा था। बगल में लकड़ी के स्टैंड पर एक भारी पीतल का घंटा लटक रहा था। दो-तीन वृक्ष भी यहां थे। वृत्ताकार जमीन के चारों ओर ऊंची-ऊंची दीवाल थी जिसमें सींखचेदार फाटक लगे थे। फाटकों के ऊपर गिन्तियां लिखी थीं। १-२, ३-४ आदि १-२ वाले फाटक में हमें ले जाया गया।

यह काफी बड़ा अहाता था, जिसमें दो बैरकें बनी थीं। एक का ताला बंद

था दूसरे का खुला। दूसरी वाली बैरक में जिस पर दो नंबर लिखा था, हमें लाया गया।

हमारे बैरक में घुसते ही नारे लगने लगे—

"इन्कलाब जिंदाबाद।"

"गन्ना कामदार संघ जिंदाबाद।"

"मजदूर एकता जिंदाबाद।"

"हमारी मांगें पूरी हों।"

उसके अंदर कोई पच्चीस-तीस व्यक्ति थे। नारे लगा चुकने के बाद उन्होंने हमें बिठाया। बैरक में दोनों ओर एक लाइन में पक्के चबूतरे बने थे। छत काफी ऊंची थी और खपरैल की थी। दीवारों में थोड़ी-थोड़ी दूर पर आकार में दरवाजे के बराबर खिड़कियां थीं जिनमें लोहे की मोटी-मोटी सलाखें लगी थीं। इन्हीं चबूतरों पर उन्होंने अपने कंबल और चादरें बिछा रखी थीं।

"आप लोग किस जिले के हैं?" हमें बिठा कर उनमें से एक व्यक्ति ने पूछा।

"पहले इन्हें नाश्ता लाकर दो फिर सब पूछ-ताछ करो।" एक दूसरे व्यक्ति ने कहा।

हमारे सामने दो तसलों में भुने हुए चने और गुड़ आ गया।

गौतम लेकर खाने लगा। हम लोगों ने भी एक-एक मुट्ठी ली।

"हां, अब बताइए आप लोग किस जिले के हैं?"

"हम लोग अलग-अलग जिले के हैं।" मैंने अपने साथियों की ओर देखकर कहा।

"आप लोग आज पकड़े गए हैं?"

"जी हां।"

"कितने बजे?"

"तड़के।"

"तड़के? तड़के ही बैठ गए थे।"

"बैठना कहां था? हम अपने घरों में थे।"

"आप गन्ना कामदार नहीं हैं?"

"नहीं।"

"आपको शायद कुछ भ्रम हुआ है, हम लोग बैंक कर्मचारी हैं।" प्रभात ने कहा।

"कोई बात नहीं।" जिस व्यक्ति ने हमें चने लाकर दिए थे कहा।

"आप लोग भी तो संघर्ष कर रहे हैं।"

"संघर्ष तो दुनियां में सभी कर रहे हैं।"

"मजदूर एकता। किसी ने आवाज लगाई।"

"जिंदाबाद।"

"भाई साहब, हम लोगों के पास तो यही चने हैं आपकी सेवा के लिए। वह भी हमारे साथी दे जाते हैं।" एक गन्ना कामदार ने कहा।

"वेरी गुड चना। गुड़ इज आल्सो वेरी गुड।" गौतम बोला। वह मुंह में काफी चने भरे था।

"अच्छा अब आप लोग आराम कीजिए थके होंगे आपके बिस्तरे लगवा दूं?"

"नहीं-नहीं, धन्यवाद।"

"घडे नहीं मिले आपको?"

"अभी दे जाएगा।"

"तब तक आपको पानी पीना हो तो हमारे घड़ों से ले लीजिएगा।"

हमने अलग-अलग चबूतरों पर अपने-अपने बिस्तर लगा लिए। अहाते के बाहर पीपल का एक बहुत बड़ा पेड़ लगा था। कोई साढ़े तीन बजे होंगे।

मित्तर चुपचाप लेटा था। हाथों की दोनों हथेलियों को एक-दूसरे पर किए वह उन्हें अपने सिर के नीचे रखे था और लगातार छत की ओर निहार रहा था। जयसिंह, गौतम और रशीद एक ही चबूतरे पर बैठे बातें कर रहे थे।

मैं प्रभात के पास चला गया। उसने मुझे बताया कि उसको पांच बजे घर में घुसकर पुलिस ने पकड़ा था। गुप्ता और विजय घर में नहीं थे। अतः पकड़े नहीं जा सके।

"क्या उनके नाम भी वारंट थे?" मैंने पूछा।

"हां।" मुझे जब वैन में बिठाकर ले जा रहे थे तो वैन उन्होंने कैंटू-मेंट रोड पर रोकी थी। शायद गुप्ता को पकड़ने गए थे। परंतु गुप्ता घर में था नहीं। विजय भी न मिला होगा। या शायद निकल गया हो।

"इसके मायने और लोग भी हो सकते हैं।"

"हां।"

फिर प्रभात मित्तर के बारे में बताने लगा कि किस प्रकार वह हवा-लात में रोने लगा था और पुलिस वालों के हाथ जोड़ रहा था।

तभी मित्तर उठकर आ गया—हम लोगों की जमानत कैसे होगी? उसने पूछा।

"पता नहीं। मैंने कहा। बाहर वाले लोग ही कुछ करेंगे।"

"देखिए ऐसा न हो कि आप लोग छूट जाएं और मैं यहीं रह जाऊं।" उसने कहा।

असलियत में वह एक-दूसरी प्रतिद्वंद्वी यूनियन का सदस्य, बल्कि सेक्रेटरी था। उसने स्ट्राइक में भाग नहीं लिया था। परंतु पुलिस ने उसे भी पकड़ लिया था।

"नहीं, ऐसा नही होगा। मैंने कहा।"

"हां, बाहर की बात और थी, यहां मैं आप ही लोगों के सहारे हूं।"

हम लोग काफी थक गए थे। कुछ देर के लिए आराम करने लगे। वहां अन्य लोगों के पास हिंदी और उर्दू के अखबार थे। मैं लेटे-लेटे अख-बार देखने लगा।

बाहर पानी का छिड़काव होने लगा था।

मोतीलाल तीन आदमियों के साथ घड़े लेकर आ गया। घड़े पानी से भरे हुए थे।

"लीजिए, घड़े ले आया। पानी भी भरवा लाया हूं। पंखा स्टाक में है नही। फिर आप लोगों को जरूरत भी क्या होगी? आप लोग तो बाहर सोयेंगे।" उसने कहा।

"चटाई? रशीद ने पूछा।"

"चटाई, देखो कल तक मिल जाएगी।"

"क्यों? है नहीं क्या!"

"शार्ट चल रही है। आज-कल बड़ी हालत खराब है। ओवर-क्राउडेड है यहां। एक हजार से ऊपर आदमी हैं।"

"कल कहां से मिल जायेगी ?"

"कल किसी की रिहाई होगी तो वापस करेगा।"

"रोज रिहाई होती है ?"

"यह तो जेल है, रोज ही यहां आते-जाते है। आप लोग तो अभी आए हैं। देखिएगा।"

वह चबूतरे पर बैठ गया था।

"और कुछ जरूरत हो तो बता दीजिएगा।" उसने कहा।

"सिगरेट मिल सकेगी क्या ?" प्रभात ने पूछा।

"लाइये पैसे मंगवा दूं।"

"पैसे तो नहीं हैं। अब कोई आए तो उससे लूं।"

"अच्छा, मैं मंगवा दूंगा। कौन-सी ? चारमीनार ?"

"हां।"

"यह आप लोगों के साथ कैसे आ गए ?" उसने मित्तर की ओर इशारा किया।

हमने उसे पूरी बात बता दी।

बाहर पानी का छिड़काव हो चुका था। लोग अपना-अपना बिस्तर लेकर बाहर जाने लगे थे।

"अच्छा चलूं। आप लोग भी अब बाहर बिस्तर लगा लीजिए।" उसने कहा और उठकर खड़ा हो गया।

हम लोग भी बिस्तर लेकर बाहर आ गए। वे लोग अपने घड़े भी ला रहे थे।

"क्या घड़े भी लाने होंगे ?"

"हां। वहां कुछ रखियेगा नहीं। रात में उसमें कैदी सोते हैं।"

"कैसे कैदी ?"

"और दूसरे कैदी।" दिन में उन्हें कहीं और भेज दिया जाता है। अभी आएंगे तो देखिएगा।

हम लोग भी अपने-अपने घड़े उठा लाए। हमारा बिस्तर सबसे

किनारे लगा था।

"मैं नहाऊंगा"। प्रभात ने कहा। उसने सारे कपड़े उतार डाले थे। केवल अंडरवियर पहने था।

"कहां नहाओगे?" मैंने पूछा।

"यहां कहीं नहाने का प्रबंध होगा।"

"मुझे कहीं ऐसा प्रबंध दिखाई नहीं दिया।"

"क्या यहां नहाने का प्रबंध है कहीं?" मैंने एक गन्ना-कामदार से पूछा।

नहाने के लिए वह एक क्षण रुका, फिर बोला, "देखिए अंदर टब में शायद पानी हो। नहीं तो इनमें से किसी से दो घड़ा मंगवा लीजिए।" उसने पानी भरने वालों की ओर देख कर कहा।

"यह लोग कौन हैं?"

"कैदी हैं। ऐसे ही काम पर लगा दिए गए हैं।"

"क्या करोगे? मैंने प्रभात से पूछा।"

"इसी घड़े के पानी से नहा लेता हूं। कौन, रात भर में छह घड़ा पानी तो पी नहीं जाएंगे।"उसने कहा।

"सुपरिटेंडेंट कैसे आ रहा है इस वक्त?" मेरे बगल में खड़े गन्ना-कामदार ने कहा। वह गेट की ओर देख रहा था।

मैंने भी उधर देखा। एक ठिगना, तगड़ा, सांवला-सा व्यक्ति आ रहा था। उसके पीछे दो-तीन और लोग थे।

हम लोगों के बिस्तरों के पास आकर वह रुक गया। जितने लोग बिस्तरों पर बैठे थे, सब उठकर खड़े हो गए।

"बैंक वाले कौन हैं?" उसने पूछा।

"हम लोग हैं। हम लोग आगे आ गए।"

"यहां कैसे आ गए आप लोग?" उसने जरा सख्ती से पूछा।

"वर्मा साहब ने भेजा है।"

"नहीं। यहां नहीं रहेंगे आप लोग। उठाइए अपना-अपना सामान। मिश्रा, इन लोगों को यहां कैसे रख दिया? इनको अलग-अलग बैरकों में भेजो।"

"हम लोगों···"

"बकवास मत कीजिए। उठाइए सामान। चार दिन में सब नक्शे-बाजी निकल जाएगी।

प्रभात जांघिए के ऊपर पतलून चढ़ाने लगा। मित्तर ने अपना सामान उठा लिया था।

हम लोगों ने भी अपने-अपने कंबल-चादरें बगल में दबाईं। एक हाथ में तसला-कटोरी और दूसरे में घड़ा लेकर बैरक से बाहर आ गए।

हम लोगों को बाहर उस वृत्ताकार स्थान में, जिसमें सभी बैरकों के फाटक खुलते थे, ले आया गया। वहां एक मेज, एक कुर्सी, पड़ी थी। चौकीदार ने हम लोगों को उसी के सामने दो-दो की लाइन में बिठा दिया। कंबल, तसला, कटोरी और घड़ा हमने बगल में रख लिए।

गौतम कंबल के ऊपर बैठ गया था।

मित्तर उसके हाथ जोड़ने लगा था, "क्या कराओगे, गौतमजी? जेल है यह। जरा ध्यान रखो।" उसने कहा।

गौतम ने कंबल किनारे कर दिया।

"हम लोगों को यहां क्यों लाया गया है?" मैंने चौकीदार से पूछा।

"अभी डिप्टी साहब बताएंगे।"

"कौन डिप्टी साहब?"

"अभी आते होंगे।"

हम खामोश बैठ गए। थोड़ी देर में वही व्यक्ति कुर्सी पर आकर बैठ गया, जिससे सुपरिटेंडेंट ने हमें अलग-अलग बैरकों में भेजने को कहा था। उसके आते ही जमादार के इशारे पर हम लोग उठकर खड़े हो गए।

उसने हम लोगों को घूर कर देखा।

'क्या नाम है?"

"जयसिंह। वही सबसे आगे थे।"

"और तुम्हारा?"

"प्रभात कुमार।"

"उसने उसे गौर से देखा।"

"क्या करते हैं आप लोग ? डाका डालते हैं ?"

"हम लोग ट्रेड यूनियनिस्ट हैं।" प्रभात ने कहा।

"ट्रेड यूनियनिस्ट हैं ! अभी सब मालूम हो जाएगा। दो-दो कंबल हैं आपके पास ?"

"जी हां।"

"नए कंबल !" उसने कहा, "रहमत अली, इनके कंबल वापस लो। पुराने कंबल निकालकर दो इनको। एक-एक।"

हमारे कंबल ले लिए गए और हमें एक-एक पुराना कंबल दे दिया गया। ऊपर से ही वह कई जगह से कटा-फटा लग रहा था।

मुझे गुस्सा आ रहा था।

"चादर भी बदलिएगा ?" मैंने पूछा।

उसने मुझे घूरकर देखा—नहीं चादर रखिए।

"यह भी नई हैं।"

उसने इस बार और घूरकर देखा, परंतु कुछ बोला नहीं।

"हां, क्या नाम है तुम्हारा ?"

"गौतमलाल।"

"और तुम्हारा ?"

"रशीद अहमद।"

"तुम दो लोग अलग हो जाओ, इधर।"

मैंने देखा, मित्तर कांपने लगा था।

"नंबरदार, इन दोनों को एक नंबर पहुंचा आओ।"

"दोनों उठकर चलने लगे।"

"तुम्हारे बाप का नौकर है कोई यहां जो तुम्हारा सामान पहुंचाएगा।" उन्होंने अपने-अपने कंबल, तसले, कटोरी आदि ले लिए।

"तुम्हारा क्या नाम है ?"

"बी० पी० श्रीवास्तव।"

"और तुम ?"

"रमेश मित्तर।"

"इन दोनों को आठ नंबर ले जाओ। उसने दूसरे जमादार से कहा और यह बाकी दो जो हैं, इन्हें नौ नंबर।"

आठ और नौ नंबर बैरक एक ही अहाते में थी। हम चारों साथ-साथ आए।

हमें फाटक के अंदर करते हुए नंबरदार ने किसी से कहा, "तो चार आदमी आए हैं। यह दो आठ नंबर और यह दो नौ।"

कोई साढ़े आठ बजे थे।

फाटक के अंदर घुमते ही हमने जो दृश्य देखा, उसने सहसा हमें भय-भीत कर दिया। अंदर घुमते ही हमारी आंखें कई जोड़े आंखों से टकराई जो सहसा एकटक होकर हमें घूरने लगी थीं। वे आखें उन कैदियों की थीं, जो संभवतः उन बैरकों मे रहते थे और इस समय बैरकें खुली होने के कारण बाहर घूम रहे थे।

विभिन्न आयु के लोग थे वे। कुछ नंगे बदन थे। कुछेक के कपड़े फटे थे। बहुतो के बाल और दाढ़ी बढ़ी हुई थी। कुछ के पैरो मे बेडिया थी। एक केवल लंगोट पहने था और बेडी के काटे को लंगोट की रस्सी मे फंसाए हुए था। दोनो बैरकों के बीच मे कुछ खुला मैदान था, जिसमें पीपल का एक बडा-सा वृक्ष था, जिस पर कई एक गिद्ध बैठे थे। उसके नीचे कच्ची मिट्टी का एक चबूतरा बना था, जिस पर एक लंबी दाढ़ी वाला व्यक्ति अकेला बैठा आकाश निहार रहा था।

जिस दृष्टि से इन सबने हमे देखा, उससे सहसा मुझे लगा, जैसे हम लोगो का जीवन खतरे मे हो।

हमारी समझ मे नही आया कि हम कहां जाएं। जिस फाटक से हम लोग अंदर भेजे गए थे, वह फाटक बंद हो चुका था। मैंने बैरक पर लिखा हुआ नंबर पढ़ा। फाटक के बिलकुल सामने वाली बैरक आठ नंबर की थी और दूसरी नौ।

मुझे और मित्तर को आठ नंबर मे जाने को कहा गया था। प्रभात और जयसिंह को नौ में। मैं आठ नंबर वाली बैरक के फाटक की ओर बढ़ा।

उसके सामने खड़े लोगों ने हटकर मुझे रास्ता दे दिया। ऐसा करने से उनके पांव की बेड़ियां जोर से खनक उठीं। मैंने बैरक के अंदर झांका। काफी अंधेरा था वहां। चबूतरे इस बरक में भी बने थे जैसे एक और दो में थे। परंतु यह बैरक उससे कुछ अधिक लंबी थी।

बैरक में घुसते ही मैंने देखा, बाएं हाथ वाले चबूतरे पर कुछ कैदी बैठे थे! उनमें से दो-तीन के पैरों में बेड़ियां पड़ी थीं। वे चिलम पी रहे थे। शायद चिलम में गाजा था, मैंने ऐसा अनुमान लगाया। उन्होंने घूरकर मुझे देखा और कुछ कहा जो मैं ठीक से सुन नहीं सका। मैं रुक गया। उनकी शक्लें मुझे बडी ही कठोर लगी।

"आपने कुछ कहा!" जो व्यक्ति चिलम पी रहा था उससे मैंने पूछा।

उसने कोई उत्तर नहीं दिया। चिलम दूसरे व्यक्ति की ओर बढा दी और मुझे घूरता रहा।

"आप लोग किस जुर्म में आए हैं?" मैंने पूछा।

"तीन सौ सत्तानवे।"

"तीन सौ सत्तानवे क्या होता है?"

"डाका।"

"और आप।"

"तीन सौ दो, कत्ल।"

मैं आगे बढ गया उनकी शक्लें देखकर मुझे लगा, जीवन का कोई-कोई मोल उनकी दृष्टि में नहीं है।

उनके अतिरिक्त भी कुछ थोड़े कैदी अंदर थे। दो-एक चबूतरे पर लेटे हुए थे। बहुत गंदगी थी वहां। बैरक के बीच तक जाकर ही मैं वापस लौट आया। दरवाजे पर खड़े कैदी मुझे घूर रहे थे।

जिस बात ने मुझे सबसे अधिक परेशान कर दिया था, वह था जमादार द्वारा प्रयोग किया गया शब्द 'आमदनी' मैंने अनुमान लगाया कि उसने कैदियों को यह इशारा किया है कि वे हम लोगों को तंग करके आमदनी कर सकते हैं।

मित्तर और जयसिंह इकट्ठे खड़े थे। प्रभाव नौ नंबर बैरक की ओर से आ रहा था।

"मैं बिलकुल डर गया हूं। मेरा साहस टूट चुका है।" उसने मुझसे अंग्रेजी में कहा।

मैं उससे कम डरा हुआ नहीं था। फिर भी मैंने कहा, "साहस बनाकर रखना होगा। ऐसे काम नही चलेगा। इन लोगों के साथ हमें एडजस्ट करना होगा।"

तभी एक अठारह-बीस वर्ष के लड़के ने मुझे नमस्कार किया।

मैंने उसकी ओर देखा, मुझे लगा, मैंने उसे कही देखा है।

'आप रकाबगंज में रहते है।" उसने मुझसे पूछा।

"हां"।

"छुट्टन के बडे भाई हैं न आप।"

"हा, तुम भी तो वही रहते हो शायद।"

"हा, मैंने आपको आते ही पहचान लिया था।"

मुझे कुछ बल मिला।

"किस जुर्म में आ गए।"

"तीन सौ सत्रह मे बंद कर दिया।"

"तीन सौ सत्रह क्या होता है?"

"चोरी।" एक दूसरे व्यक्ति ने कहा।

"रामपती भी यही है।"

उसी आयु के एक अन्य दुबले-पतले लड़के ने मुझे हाथ जोड़कर नमस्कार किया। वह जालीदार बनियान और लाल रंग की जांघिया पहने था।

"यह भी वही रहते हैं?"

"जी हां," वह बोला—"मैं आपको अच्छी तरह जानता हूं।"

"तुम कैसे आ गए?"

"वह मैकू की लड़की हमारे साथ चली आई थी न। मैकू, भूसे-वाला जो है। चौराहे पर।"

"हां, हां," मैंने कहा। मैं मैकू को बिलकुल नहीं जानता था।

"रामप्यारी नाम है जिसका। उसी में पकड़ लिया।

"क्या तुम्हारे साथ भाग गई थी।"

"नहीं, कोर्ट से शादी कर ली थी हम लोगों ने।"

"फिर क्यों पकड़ लिया ?"

"मैकू की दुल्हिन ने रिपोर्ट लिखा दी थी। आगरे से पकड़कर लाए हैं हमको। वारंट कटा दिया था यहां से।"

"तो तुमने कोर्ट का सर्टिफिकेट नहीं दिखाया।"

"अब छब्बीस को पेशी है, वहीं सब कागज पेश हो जाएंगे।"

मेरा हौसला काफी बढ़ गया।

प्रभात और जयसिंह अपनी बैरक में चले गए थे। कुछ कैदी इधर-उधर बैठे खाना खा रहे थे, 'हम लोगों को खाना नहीं मिलेगा ?" मैंने पूछा।

"खाना आपको कल से मिलेगा। दूसरे दिन से खाना मिलता है यहां।"

"अच्छा।" मैंने हंसने का प्रयत्न किया। इसके मायने आज भूखे ही रहना होगा।

"देखिए मैं इंतजाम करता हूं। आइए आप।" कुछ सभ्य लगने वाले एक व्यक्ति ने कहा।

मैं उसके साथ बैरक में आ गया। उसने मुझे एक चबूतरे पर बिठा दिया। मित्तर भी मेरे साथ था। थोड़ी देर बाद वह व्यक्ति लौटा तो उसके हाथ में रोटियां और दूसरे में एक तसले में दाल थी।

"मैं अपने दूसरे साथियों को भी बुला लूं ?" मैंने कहा।

"हां, बुला लीजिए।"

मैं बाहर से प्रभात और जयसिंह को भी बुला लाया। वे अपनी बैरक के गेट पर खड़े थे। प्रभात एक कैदी से बंगला में बात कर रहा था।

"चलो, मैंने खाने का प्रबंध किया है खा लो चलकर।" मैंने कहा।

"इसको कहां रक्खें ?" उनका तसला, कटोरी और कंबल आदि जमीन पर रखा था।

"इसको यहीं छोड़ दो।" उनके पास खड़े हुए कैदी ने कहा। जल्दी खा आओ नहीं तो बैरक बंद होने वाला है।

वे मेरे साथ चले आए।

"बंगाली है ?" मैंने पूछा।

"हां।"

"चलो अच्छा है। बंगाली होने का लाभ उठाया तुमने। क्या बंगाली बंगाली जेल में भी मिलते हैं तो भी बंगला ही बोलते हैं ?" मैंने मजाक किया।

"नहीं, नहीं। मैं जानता हूं इसे। बोस है यह। वह तुमने सुना होगा हेवट रोड पर जो मर्डर हो गया था। पान वाले की दुकान के सामने।"

हां, हां। इसी ने किया था।

"हां।"

"तब तो बड़ा खतरनाक आदमी होगा।"

"नहीं। बहुत सीधा है। इसका दोष नहीं। वह तो यह पिए हुए था और फिर पान वाले ने चाकू बढ़ा दिया।"

मित्तर उसी चबूतरे पर लेट गया था। धोती का सिरा उसने अपने सिर के चारों ओर लपेट लिया था।

"उठो, उठो। लेट क्यों गए ?"

"वह उठकर बैठ गया।"

मैंने रोटियां उठाईं। काफी बड़ी-बड़ी, पतली, सूखी हुई-सी रोटियां थीं, जिनमें काफी गर्द भरी थी। मैंने उन्हें आपस में रगड़कर झाड़ा। काफी गर्द और मोटा-मोटा-सा आटा उनसे गिरा।

एक-एक रोटी सबको देकर तसले की दाल मैंने बीच में रख दी। "लो खाओ," मैंने कहा और रोटी का कौर तोड़कर दाल से डुबोया।

दाल में पानी-ही-पानी था जो काफी गंदा नजर आ रहा था। सबने कौर दाल से डुबोकर मुंह में रखा।

मित्तर टुकड़ा हाथ में लिए बैठा रहा।

"खाओ।" मैंने कहा।

उसने रोटी चबूतरे पर रख दी। मैं नहीं खाऊंगा। मुझे भूख नहीं है।

प्रभात भी एक निवाला खाकर रुक गया था।

"क्यों ?" मैंने कहा।

"मुझसे नहीं खाया जाएगा।"

"जितना खाते बने खा लो। सुबह से कुछ खाया तो नहीं हम लोगों ने। और इसके अलावा और कुछ मिलेगा भी नहीं।"

जिस व्यक्ति ने हमें अपना खाना दिया था वह फिर आ गया था। उसके एक हाथ में कुछ रोटियां और दूसरे में एक और तसला था।

"बस इतना बहुत है।" मैंने कहा।

"और ले लीजिए। इतने में क्या होगा। यह लोग भी तो खाएंगे।" उसने प्रभात और जयसिंह की ओर देखकर कहा।

"नहीं भाई बस यही नहीं खाया जा रहा है।"

"अच्छा यह सब्जी ले लीजिए। उसने तसला चबूतरे पर रख दिया।"

"सब्जी मे पात-गोभी के कुछ टुकड़े थे और पानी भरा हुआ।"

"लो सब्जी से खा लो!" मैंने प्रभात और मित्तर मे कहा।

बड़ी मुश्किल से प्रभात ने आधी रोटी खाई। मित्तर दो-तीन निवाले खाकर रह गया। मैंने एक रोटी खाई। वह भी मैंने किसी तरह मुंह में ठूंस ली। जयसिंह ने भी ऐसे ही एक-दो रोटियां खाईं।

"क्या बात है तुम तो और खाओ!" मैंने जयसिंह मे कहा। वह हम में सबसे हृष्ट-पुष्ट था।

"बस!"

"क्यों? डर तो नहीं रहे हो?" मैंने कहा।

वह सुबह मे बहुत कम बोला था और मेरा अनुमान था कि अंदर-ही-अंदर बहुत डरा हुआ था।

नहीं डरने की क्या बात है। आप लोग जो है। उसने कहा।

"हां। डरना नहीं।"

कैदी बैरक में लेटने लगे थे।

हमने घड़ों मे पानी पिया और वहीं हाथ मुंह धोया।

"चलिए आप लोग आइए अपनी बैरक में। बैरक बंद होने जा रहा है।" किसी ने कहा।

प्रभात और जयसिंह उठकर जाने लगे। मैं उन्हें गेट तक पहुंचाने

गया। "घबराना नहीं।" मैंने प्रभात से कहा।

प्रभात ने कोई उत्तर नही दिया।

"जयसिंह तुम इनका ध्यान रखना जरा।"

प्रभात की आंखें बहुत कमजोर थीं। वह आठ नौ पावर का चश्मा लगाता था।

"चलो गिनती के लिए बैठो।" एक व्यक्ति जोर से चिल्ला रहा था।

सब कैदी चबूतरों के बीच में पड़ी खाली जगह में लाइन लगाकर बैठ रहे थे।

"जोड़े से, जोडे से।" वह व्यक्ति चिल्ला रहा था। हम लोग भी लाइन में बैठ गए।

हाथ में छडी लिए हुए दो जमादारों ने विरोधी दिशाओं में गिनती शुरू की। वे जोर-जोर से चिल्लाकर गिन रहे थे। एक, दो, तीन··· बावन, तिरपन, चौवन, पचपन। लगभग एक ही साथ दोनों ने गिनती समाप्त की। एक बार उन्होंने फिर गिनती की। उसके पश्चात् वे बाहर चले गए। बैरक के गेट मे ताला डाल दिया गया।

दूसरी बैरक मे भी उसी समय गिनती हो रही थी, जिसकी आवाज हमें सुनाई दे रही थी।

गिनती समाप्त होते ही सब उठकर खड़े हो गए और बैरक में फिर शोर-गुल होने लगा। सब अपने-अपने चबूतरों पर चले गए, बहुतों ने जमीन पर अपने कंबल बिछा रखे थे।

मैं खड़े होकर चबूतरों की संख्या गिनने लगा। कुल अड़सठ चबूतरे थे और एक सौ दस कैदी इसमें बंद थे। चबूतरों के बगल और बीच के रास्तों में हर जगह बिस्तर लग गए थे।

"हम लोग कहां सोएंगे?" मित्तर ने पूछा।

"इसके बाहर तो शायद जा नहीं सकते।" मैंने कहा—"फाटक में ताला लग गया है।"

"मेरा मतलब है सोएंगे कहां?"

"क्या तुमको नींद आ रही है ?"

"मेरी तबियत ठीक नहीं है।"

"यहीं कहीं जमीन पर बिछा लो, जहां जगह हो।"

"जमीन पर तो मेरी तबियत और खराब हो जाएगी।"

"फिर चारपाई कहां मिलेगी ?"

"इनमें से कोई खाली नहीं हो सकती ?" उसने चबूतरों के बारे में पूछा।

"तब तक टहलो, मैं देखता हूं।"

मैंने खड़े-खड़े सारी बैरक में निगाह दौड़ाई। बीच के एक चबूतरे पर जिस व्यक्ति ने गिनती के लिए आवाज लगाई थी, बैठा था। उसकी आयु पैंतीस-चालीस के आस-पास रही होगी। उसके बाल काफी छोटे थे और वह चश्मा लगाए था, जिसकी एक कमानी आधी टूटी थी। मैंने देखा, उसका चबूतरा अपेक्षाकृत साफ था और उस पर कुछ कापी-किताबों के ढेर थे।

"यह सज्जन कौन है ?" मैंने पास वाले एक कैदी से पूछा।

"राइटर हैं।"

"राइटर हैं ?"

"जी।"

मैंने उसे दुबारा देखा। वास्तव में वह लेखक लगा मुझे। मैं उसकी ओर चला गया।

"बैठ सकता हूं ?" मैंने उससे पूछा।

"जी हां, शौक से बैठिए। रुकिए चादर बिछा दूं।" उसने कहा।

"नहीं, नहीं, ऐसे ही ठीक है।"

मैं चबूतरे पर बैठ गया। आप राइटर हैं ?

"आपकी दुआ से।" उसने पल्थी मार ली।

"आप कैसे आ गए यहां ?"

"वायर कटिंग में। वह उंगलियों से हवा को कैंची की तरह काटते हुए बोला।"

"वायर कटिंग ?"

"टैलीफोन का तार होता है न, तांबे का·········।"

"हां, हां। तो क्या लिखते हैं आप ? कहानियां, वगैरह ?"

"नहीं तो।"

"कविता ?"

"नही-नही । मैं कैदियों का हिसाब लिखता हूं, आमदनी खर्च वगैरह।"

"आमदनी-खर्च ।"

"जी हां। जितने कैदी आए-गए रोज उसी का हिसाब जो लिखता है, उसे राइटर कहते हैं।"

"जेल की तरफ से कुछ तनख्वाह वगैरह मिलती है आपको ?"

"अरे नहीं। थोडा पढ़ा-लिखा होता है जो, उसी को बना देते हैं, बस।"

"कहा तक पढ़ा है आपने ?"

"आठवें तक। असलियत मे मैं मैकेनिक हूं। सक्सेना कायस्थ हूं,"

"काहे के मैकेनिक ?"

"बिजली, रेडियो वगैरह का सारा काम जानता हूं।"

मैंने उसे मित्तर के बारे में बताया कि उसकी तबियत ठीक नहीं है। क्या वह उसके लिए एक चबूतरे का इन्तजाम करा सकता है।

"हां, हा, देखिए देखता हूं।" वह उठकर खडा हो गया। तब एक कैदी के पास जाकर उससे बोला कि वह अपना बिस्तर जमीन पर लगा ले।

कैदी तुरंत मान गया। मैंने मित्तर को कहा, वह अपना बिस्तर उस पर बिछाकर लेट गया।

"आपके लिए भी देखिए मैं कही न कहीं प्रबंध करता हूं।" राइटर ने कहा।

"मेरी आप चिंता न करें, मैंने उत्तर दिया। मैं कहीं भी सो लूंगा।"

"खैर देखिए, देखता हूं।" उसने चलते हुए कहा।

"मैं वहीं मित्तर के बिस्तर पर बैठ गया।"

"हम लोगों की जमानत कैसे होगी ?" मित्तर ने पूछा।

"तुम सो जाओ।" मैंने कहा, और सिगरेट पीने लगा। मोतीलाल हमें एक पैकेट दे गया था। पांच मैंने ले ली थीं, पांच प्रभात को दे दी थी।

जिस लड़के ने मुझे अहाते में सर्वप्रथम नमस्कार किया था वह मेरे पास आ गया था। आपका बिस्तर कहां है ? लाइए बिछा दू। उसने कहा।

"कहां बिछाओगे ?"

"आप फिकर न कीजिए। मैने सब इंतजाम कर लिया है।"

मैने बिस्तर उसे दे दिया।

मैने देखा, वह बैरक के बिलकुल अंत में बिस्तर लगा रहा था। बिस्तर बिछाकर वह मेरे पास लौट आया और फर्श पर बैठ गया।

फर्श पर किसी और कैदी का बिस्तर बिछा था। उसने उसके वहां बैठने पर आपत्ति की। वह उसमे झगडने लगा।

मैंने उसे झगडने के लिए मना किया और उसे मित्तर के चबूतरे पर बिठा दिया। मित्तर ने एक बार घूमकर उसे देखा, फिर करवट लेकर आंखें बंद कर लीं।

"आप बिलकुल फिकर न कीजिएगा। उस लड़के ने मुझसे कहा, मेरे होते हुए आपको कोई तकलीफ नहीं हो सकती।"

"मुझे कोई तकलीफ नही है।" मैंने कहा।

"घर में लोगों को पता है न ?" उसने पूछा।

"हां।"

"फिर कोई बात नही। कल आपका सामान आ जाएगा। यहां साले सब बड़े पाजी हैं, रुपया किसी को दिखाकर आप मत लाइएगा। जूता पहने हैं न।"

"नहीं, मैं चप्पल पहने हूं।" मैंने कहा।

"कोई बात नहीं। उसने अपना मुह मेरे कान के निकट कर लिया—चप्पल के तले में चमड़े की बीच नोट खोंस लीजिएगा, नहीं तो साले ले लेंगे।"

"चप्पल क तले में कहां ?" मैंने पूछा।

"मैं बता दूंगा। परसों मुलाकात आएगी इतवार है न।"

"कल ?"

"कल मुलाकात नहीं होगी। इतवार को होती है। सिगरेट है आपके पास ?"

मैने उसे सिगरेट दे दी।

उसने सिगरेट सुलगा ली और कश मारने लगा। "आपका बिस्तर वहां लगा दिया है।" उसने बिस्तर की ओर इशारा किया। और यहां किसी से बातचीत न कीजिएगा कुछ। सब साले चोर हैं।

"तू बड़ा साहूकार है।" नीचे फर्श पर लेटे हुए कैदी ने कहा।

"तू चुप बैठ। साला मदकची गिरहकट।"

"देख जबान संभाल कर बात कर।" वह कैदी उठकर बैठ गया,

उत्तर मे वह कुछ कहने जा रहा था परंतु मैंने उसे रोक दिया। तुम चलो मैं अभी आता हू। मैंने कहा।

वह उठकर चलने लगा। पेशाब घर वहां बना है। पेशाब करना हो तो कर आइएगा। पाखाना भी वही है। रात को पेशाब-पाखाने जाना हो तो पेशाब-पाखाने की रिपोर्ट कर दीजिएगा। उसने बताया।

"कैसी रिपोर्ट ?"

"देखिए बताता हूं। वह उठकर खड़ा हो गया और जोर से चिल्लाया—'पेशाब की रिपोट' और सीधा पेशाबघर चला गया।"

"साला अभी से रिपोट लगा रहा है।" किसी ने कहा। कुछ और लोग हंसने लगे।

बैरक में अब भी काफी शोर-गुल था। कुछ कैदी एक चबूतरे पर बैठकर ताश खेल रहे थे। कुछ अपने-अपने चबूतरों पर खाना लिए खा रहे थे। वही रोटियां थीं, जो हम लोगों को उस व्यक्ति ने दी थीं। एक जगह एक व्यक्ति घड़े को तोड़ कर चूल्हा बनाए उसमें आग जलाए था। उस पर तसला चढ़ा था, जिसमें कुछ पक रहा था। चबूतरे पर

सब्जी काटी जा रही थी। राइटर के चबूतरे पर एक व्यक्ति बैठा कच्ची आमियां छील रहा था। दूसरे कोने पर एक बाबाजी ने कीर्तन शुरू कर दिया था उनके अच्छी-खासी दाढ़ी थी और वह पीले रंग के कपड़े पहने थे। उनके चारों ओर दस-बारह कैदी भीड़ बनाए बैठे, कीर्तन में भाग ले रहे थे। दो-एक चबूतरों पर चिलम चल रही थी।

मैंने जाकर राइटर से कहा, "मेरे लिए चबूतरे का प्रबंध न कीजिएगा। मेरा बिस्तर लग गया है।"

"क्यों, कहां लगा है ?"

मैंने उसे बताया।

"वहां कहां लेटिएगा जमीन पर !" उसने कहा—"मैं यहां चबूतरे का इंतजाम कराए देता हूं।"

"नहीं रहने दीजिए। क्यों किसी को उठाइएगा।" मैंने कहा।

"जैसी आपकी मर्जी।"

मैं जाकर अपने बिस्तर पर लेट गया।

वह लड़का वहां और कैदियों से झगड़ रहा था। मुझे आया देखकर उसने झगड़ा बंद कर दिया और मेरा बिस्तर झाड़ने लगा। तसला कटोरी सिरहाने रख लीजिएगा। यहां साले सब बड़े चोर हैं। उसने कहा।

मैंने कंबल के नीचे टटोला। तसला, कटोरी पहले से सिरहाने रखे थे।

मैं लेट गया। लेटे-लेटे मैंने अनुमान लगाया, नौ बजे होंगे। संडास पास होने के कारण वहां अच्छी-खासी बू आ रही थी। एक बार इच्छा हुई कि राइटर से कहकर कहीं चबूतरे का प्रबंध करूं। परंतु फिर मैं टाल गया। एक बार मना कर चुका था। दुबारा कहते अच्छा नहीं लग रहा था।

उस लड़के ने अगल-बगल के कैदियों से मेरा परिचय कराया। कोई चोरी में आया था, कोई गिरहकटी में। सब अपने को बेकसूर बता रहे थे।

मैंने उनसे अधिक बात नहीं की। चुपचाप लेटा रहा।

"पैर दबा दूं आपके ?" उस लड़के ने पूछा। "अबे ओ खलील,

जरा बाबूजी के पांव दाब दे।"

खलील किसी की पीठ दाब रहा था। उसने मेरी ओर देखा।

"नही रहने दो।" मैंने कहा, मुझे पांव नही दबवाने हैं।

"दबवा लीजिए। थक गए होंगे।" फिर मेरे निकट होकर उसने कान मे कहा, "एक सिगरेट दे दीजिएगा। घंटे भर पांव दबाएगा।"

"नही-नही, ठीक है।" मैंने कहा। मेरे पास कुल तीन सिगरेटें रह गई थी और मैं किसी को देना नही चाहता था।

तभी उसने कहा, "एक सिगरेट हो तो दे दीजिए। इस साले रज्जन को गाजे की लत पडी है।"

मैंने चुपचाप एक सिगरेट निकालकर उसे दे दी।—लो कुल एक रह गई है अब। मैंने कहा—"सुबह लैट्रिन जाने से पहले पिऊंगा।"

उसने सिगरेट ले ली।—आप लेटिए। आराम कीजिए। उसने कहा और उठकर दूसरे चबूतरे पर चला गया।

मैं लेटे-लेटे प्रभात के बारे मे सोच रहा था। सीखचो के पार उसकी बैरक दिखाई दे रही थी।

"एक सौ दस हवालाती बंद। ताला, जंगला, बत्ती ठीक। आठ नंबर।"

मैं उठकर बैठ गया। बडी लय और मधे हुए ढग से आवाज लगाई गई थी। मैंने देखा आवाज लगाने वाला व्यक्ति पीले कपडे पहने लाल टोपी लगाए था। नबरदार था शायद। दो ऐसे व्यक्ति थे बैरक मे। उसी समय कुछ ऐसी ही आवाज सामने वाली बैरक से भी आई।

"यह आवाज कैसी लगाते है ?" मैने बगल मे बैठे एक कैदी से पूछा।

"हर आध घंटे बाद यह आवाज लगाई जाती है।" उसने बताया।

मैं फिर लेट गया। तभी बड़े मधुर स्वर मे किसी के गाने की आवाज सुनाई दी—

हरनी रोयें, रोयें पूछे न
अपने हरना वाले संदेसवा, हरनी
रोये रोये पूछ न ?···

साथ मे कोई बाजा भी बज रहा था।

मैं उठकर बैठ गया। देखा, दूसरे सिरे पर एक व्यक्ति एक चबूतरे पर बैठा गा रहा था। चार-छह और कैदी उसे घेरे बैठे थे। मैं उठकर मित्तर के चबूतरे पर चला गया। मित्तर का चबूतरा उसके निकट ही था।

'हरनी रोये-रोये पूछे न।'

वह गा रहा था।

"सो गए?" मैंने मित्तर से पूछा। वह खर्राटे ले रहा था, "बहुत जल्दी सो गए?" मैंने उसे हिलाया।

वह एकदम मे चौंक पड़ा और मेरे ऊपर बिगड़ने लगा, "यह बद-तमीजी मुझे पसंद नहीं है। चलिए आप यहां से।"

"क्यों क्या किया मैंने? अभी से सो जाओगे?"

"तुमसे मतलब?"

"मुझसे कोई मतलब नहीं है। मैं तो वैसे ही कह रहा था।"

"ठीक है। आप अपने बिस्तर पर जाइए। मुझे सोने दीजिए।"

मैं उठकर राइटर के चबूतरे पर आ गया। उसी के बगल वाले चबूतरे पर वह व्यक्ति बैठा गा रहा था।

'वही जंगल मा बाम करे, बधिक लगावै फांसी,
फांद उलर के हरनी निकरगै, हरना के लाग गै फांसी,
हरनी रोये रोये पूछे न।'

मैंने देखा, यह कोई पच्चीस-छब्बीस की आयु का तगड़ा, हट्टा-कट्टा जवान था। पांव में बेड़ियां पड़ी थीं। वह गा रहा था। एक और व्यक्ति तसला बजा रहा था और बिलकुल काला, स्वस्थ-सा एक आदमी पल्थी मारे, आंखें बंद किए बैठा ताली बजा रहा था। उसकी गर्दन बार-बार इधर-उधर हिल रही थी और वह गाने में बिलकुल तन्मय था। मैंने देखा, उसकी आंखों की कोरें भीग चली थीं।

मैं चुपचाप बैठ गया।

गाना समाप्त हो गया। काला वाला व्यक्ति अब भी हिले जा रहा था।

"और कुछ सुनाइए।" मैंने कहा।

मेरी आवाज सुनकर काले वाले व्यक्ति ने आंखें खोल दीं।

"आप लोगों के सुनने लायक नहीं है।" जो कैदी गाना गा रहा था उसने कहा, "देहाती गाना है सब।"

"हां, हां मैं सुनूंगा," मैंने कहा, "देहाती गाने मुझे बहुत पसंद हैं।"

वह झेंप गया। "सुना तो दिया," उसने कहा, "अब और नहीं आता।"

"कोई याद करके सुनाओ।" मैंने कहा।

और लोगों ने भी कहा, "हां, हां सुनाओ न।"

"क्या सुनाऊं ?" उसने अपने और साथियों से पूछा।

"कुछ भी सुना दो।"

"भजन सुनाता हूं अच्छा।"

"भजन ? अच्छा चलो भजन ही सुनाओ।" मैंने कहा।

एक व्यक्ति तसला बजाने लगा।

उसने कोई पुराना भजन सुनाया। जल्दी ही भजन समाप्त हो गया।

"कुछ और सुनाओ," मैंने कहा, "भजन-वजन नहीं। देहाती भाषा में सुनाओ। कुछ पूर्वी-उर्वी नही आता ? कहां के रहने वाले हो ?"

"बाराबंकी के।"

"तब तो पूर्वी जरूर जानते होगे।" मैंने कहा। वैसे भूगोल में बाराबंकी की क्या स्थिति है, मैं नही जानता।

"आपके सुनने वाला नहीं है", उसने शरमाते हुए कहा।

"सब सुनने वाला है तुम सुनाओ।"

वह गुनगुनाने लगा। फिर एकदम उसका कंठ फूट पड़ा।

'नहीं जाऊंगी, नहीं जाऊंगी

अकेले तोरे खेलवा में नहीं जाऊंगी।'

सब झूमने लगे।

इन किलाब ! जिंदाबाद !

इन किलाब ! जिंदाबाद !

रोटी-कपड़ा दे न सके जो ! वह सरकार निकम्मी है।

मैं चौंक पड़ा। वे सब हंसने लगे। राइटर तो हंसते-हंसते लोट-पोट हो गया।

'यह क्या हो रहा है ? मैं अचम्भे में पड़ गया था। बैरक की

दीवाल के बाहर से ये आवाजें आ रही थीं। साथ-साथ बर्तनों की भी आवाजें आ रही थीं।

"यह सब राजनीतिक कैदी हैं। बगल वाली बैरक में। घेरा डालो आंदोलन वाले हर रात इसी तरह चिल्लाते हैं।" राइटर की हंसी रुकी, तो उसने बताया।

"रात-भर चिल्लाएंगे ?" मैंने पूछा।

"अभी चुप हो जाएंगे सब। जब मूड आता है, तब चिल्लाने लगते हैं अभी देखा क्या है आपने। कुछ दिन रहिएगा तो देखिए।"

मैंने देखा मित्तर उठकर अपने चबूतरे पर बैठ गया था। शोर-गुल समाप्त हो गया तो वह फिर चुपचाप लेट गया।

बगल वाले चबूतरे के लोग उठकर अपने-अपने बिस्तरों पर चले गए थे। केवल वह व्यक्ति, जो गा रहा था, अभी बैठा था। शायद उसी का चबूतरा था वह। बाबा जी का कीर्तन चल रहा था और दूसरे कोने में कुछ लोग बैठे ताश खेल रहे थे।

"यह बाबा जी कैसे आ गए यहां ?" मैंने राइटर से पूछा।

"औरत भगाने के चक्कर में।" उसने बताया।

"औरत भगाने के चक्कर में !" मैंने वहीं से बैठे-बैठे बाबा जी की आयु का अनुमान लगाया। मेरे विचार से साठ से कम नहीं रहे होंगे।

"एक सौ दस हवालाती बंद, ताला, जंगला, बत्ती ठीक, आठ नंबर।" नंबरदार ने फिर आवाज लगाई। बीच में भी वह कई बार आवाज लगा चुका था।

"ग्यारह बज गए।" राइटर ने कहा।

"घड़ी है आपके पास क्या ?"

"नहीं तो।"

"फिर समय कैसे बताया आपने ?"

"छठी आवाज थी न यह। हर आध घंटे के बाद आवाज लगाता है। आठ बजे शुरू होता है।"

"रात भर आवाज देता यह ?" मैंने पूछा।

"एक बजे ड्यूटी बदल जाएगी।" उसने बताया, "दो और यहीं सो रहे है। एक बजे के बाद से यह सोएंगे। वह पहरे पर आ जाएंगे।"

"गिनते भी हैं यह लोग या यों ही आवाज लगा देते हैं।" मैंने पूछा।

"गिनता कौन है," उसने कहा, "जानते हैं ही कि सब पूरे हैं। भाग तो कोई सकता नहीं।"

"पेशाब की रिपोट।" किसी ने कहा और उठकर पेशाब करने चला गया।

"यह क्यों कहते है ?" मैंने राइटर से पूछा।

"पुराना कायदा चला आ रहा है।" उसने बताया, "असलियत में पहले बिजली तो होती नही थी। इन सालों का क्या ठीक रात में एक-दूसरे की चोरी कर लें, एक-दूसरे से मार-पीट कर लें, सीखचें तोड-ताड़ के निकल जाएं। इसीलिए बिना इजाजत उठने की आज्ञा नहीं थी। अब तो रात-भर बिजली जलती है। कोई जरूरत तो है नही अब, लेकिन पुराना कानून है, चला आ रहा है।"

मैंने देखा बगल वाला व्यक्ति मुंह मे बिना जली बीड़ी लगाए एक पालिश की डिब्बी को खोलकर फर्श पर रखे एक छोटी -सी टीन की पत्ती मे पत्थर रगडकर चिनगारी उत्पन्न कर रहा था। एक-दो चिनगारी डिब्बी मे रखे हुए कपडे पर उसने गिराई। फिर उसमे फूंक मार आग पैदाकर ली। बीड़ी सुलगाकर डिब्बी बंद करके उस ने फिर रख ली।

"माचिस नही है क्या ?" मैंने पूछा।

"नही।" उसने कहा।

"माचिस बैरक के अंदर लाना मना है।" राइटर ने मुझे बताया।

"लेकिन मेरे पास तो है।" मैंने कहा।

"अरे कौन देखता है। है तो मेरे पास भी। मगर कानूनन मना है।

एक कदी उठकर अपने चबूतरे पर कलाबाजी खाने लगा था—"मर गया,

मर गया। अरे मुझको बचाओ। मैं मर जाऊंगा।" जोर-जौर से चिल्ला-चिल्लाकर वह हाथ-पांव इधर-उधर फेंक रहा था जैसे उसे मिरगी का दौड़ा पड़ गया हो।

"क्या हो गया इसे ?" मैंने राइटर से पूछा।

"अफीमची है साला। तीन दिन से मिली नहीं इसीलिए बेचैन है कल तो बैरक भर में इधर-उधर लोटा-लोटा फिर रहा था। मार उधम किए था।"

मैंने देखा, वह उठकर कै करने लगा था। तमाम हरी-हरी कै उसने चबूतरे पर कर दी थी।

राइटर उसके पास चला गया, "ऐसी आदत है साले, तो चोरी क्यों करता है ? जेल में अफीम का ठेका खुला है क्या ?"

"थोड़ी-सी मंगवा दो, मैं मर जाऊंगा, माई-बाप।" वह अब भी हाथ-पांव पटक रहा था।

"पहले इसको साफ कर उठकर मरदूद। कल इजेक्शन लगवा दूंगा।"

मैं भी उठकर राइटर के साथ चला गया था "कैसा इजेक्शन ?" मैंने पूछा।"

"मार्फिया का। कल साला बहुत मर रहा था तो रात में डाक्टर को बुलवाकर इजेक्शन लगवाया, तब साला सोया, नहीं तो उधम किए था। मार तसला-कटोरी उठा-उठाकर इधर-उधर फेंक रहा था। कितने तो साले ने घड़े फोड़ डाले।" राइटर ने कहा फिर उस पर बिगड़ने लगा, "लेट चुपचाप साले और इस कै को धोकर साफ कर चबूतरा, नहीं तो उसी में लेट।"

वह उसके हाथ जोड़-जोड़कर चिल्ला रहा था और अपने पेट में मुक्के मार रहा था।

"मर साले।" राइटर अपने चबूतरे पर लौट आया। मैं भी आ गया।

बाबा जी का कीर्तन बंद हो गया था। अधिकतर लोग सोने लगे थे। केवल एक कोने में ताश अभी चल रहा था।

"तुम कैसे आये यहां ?" जो व्यक्ति गाना गा रहा था, उससे मैंने पूछा।

"डाके मे।"

"डाला था डाका ?"

"नही।"

"फिर कैसे पकड लिए गए ?"

"मालिक ने पकडवा दिया।"

"क्या हुआ था ?"

"फार्म था मालिक का। उन्ही के यहा फारम पर नौकर था मैं। वही डाका डलवाते थे और औजार सब फारम पर रखते थे।"

"औजार ?"

"बदूक, पिस्तौल वगैरह।"

"तो ?"

"हमको पता लगा तो हमने कहा, 'मालिक हमको यहा खतरा लगता है हम यहा फारम पर नही रहेगे।' वह कहने लगे, 'तुमको क्या करना तुम अपना काम करो।' "

"तुम्हारा क्या काम था।"

"फारम पर तकवाही करने का। सो हम खामोश हो गए। मगर एक दिन पुलिस को पता चल गया।"

"मालिक शहर गए थे तभी पुलिस फारम पर आ गई। हमसे पूछने लगी," 'औजार कहा है ?' हमने कहा, 'हमको नही मालूम।' सो हमको खूब मारा। मगर हमने फिर भी नही बताया। फिर हमको थाने पर ले आए। वहां गरम-गरम सलाख से हमको जलाने लगे। और मारा हमको। हम बेहोश हो गए। जब होश मे आए तो फिर मार पडे।

" 'कहने लगे बता दो तो कुछ नही होगा।'

हमने बता दिया। सो वही मालिक ने हमारे ऊपर मढ दिया। खुद बच गए।"

"कौन हैं मालिक तुम्हारे ?"

"सरजूसिंह !"

"सरजूसिंह एम० एल० ए० ?"

"जी हां, कांगरेसी नेता हैं बहुत बड़े।"

मैं चुप हो गया। राइटर उठकर जहां लोग ताश खेल रहे थे चला गया था, "चलो बंद करो अब। बारह बज गया।" वह उन्हें कह रहा था। मैं उठकर अपने बिस्तर पर आ गया। चबूतरों के ऊपर दीवाल में लकड़ियां खोंसकर लोगों ने खूटियां बना ली थीं। मैंने कमीज उतारकर उन्हीं में से एक में टांग दी और लेट गया। सिरहाने टटोल कर देखा। तसला-कटोरी अपनी जगह पर थे। तसले का सिरहाना बनाकर मैं लेट गया। हल्की-सी ठंडक होने लगी थी। चादर निकालकर मैंने ओढ़ ली। चप्पल कंबल के नीचे बगल में रख लिए। जब कभी तेज हवा आती तो संडास की बू फैल जाती। कंबल में काफी खटमल थे। मैं उठकर फिर बैठ गया। सब सो रहे थे केवल नंबरदार चबूतरे पर बैठा बीड़ी पी रहा था। सोते हुए सब कैदी मुझे साधारण इंसान लगे। जो भय बैरक में आते समय मुझे लगा था वह समाप्त हो चुका था।

काफी देर मैं बैठा रहा फिर आखें बंद करके लेट गया। नींद नहीं आ रही थी। फिर भी आंखें बंद किए रहा बीच-बीच में पिसाब की रिपोट, पानी की रिपोट सुनाई दे जाता। बेड़ी वाले कैदी करवट लेते तो बेड़ियां बज उठतीं। "एक सौ दस हवालाती बंद, ताला, जंगला, बत्ती ठीक, आठ नंबर।" नंबरदार जैसे नींद से उठकर आवाज लगा रहा था।

पता नहीं कब मुझे नींद आ गई।

मुझे कुछ सर्दी लग रही थी और मैं चादर को अपने चारों ओर लपेट रहा था, आधा कंबल भी शायद मैंने लपेट में ले लिया था। रात में सोते-सोते एक-दो बार मैंने तसला, कटोरी और चप्पल भी टटोले थे। वे अपनी जगह सुरक्षित थे।

किसी ने मुझे बांह से पकड़ कर जगाया। वही लड़का था, रमेश, जिसने मेरा बिस्तर लगाया था रात में। "उठिए, गिनती परेड होगी।" वह

कह रहा था मैंने आंखें खोलीं। सुबह हो गई थी। पहली बार जीवन में इतने सबेरे किसी ने मुझे जगाया था। सूर्य अभी ठीक से उगा भी नहीं था। शायद चार-पांच बजे का समय रहा होगा।

मैं हड़बड़ाकर उठ बैठा। देखा कमीज खूटी पर टंगी थी। मैंने कमीज पहन ली। सबने अपने-अपने बिस्तर लपेट लिए थे। मैंने भी बिस्तर लपेटा। चप्पल निकालकर पहनी। सिगरेट निकालकर जेब में रखा। पैकेट खोल कर देखा। एक ही सिगरेट थी। दो होनी चाहिए थी।

"बाहर च लिए प्रार्थना होगी।" रमेश ने कहा।

मित्तर भी वहीं आ गया था।

"तुम जग गए ?"

"बहुत पहले जग गया था मैं।" उसने कहा।

मैं चलने लगा तभी राइटर ने पुकारकर कहा, "आप लोग अपने कंबल और तसले—कटोरे भी ले लीजिए। जांच पर जाना होगा।"

"मैं भी ले लू ?" मित्तर ने पूछा।

"हां, आप भी।"

मेरा बिस्तर रमेश ने उठा लिया।

"रहने दो। मैं ले लूगा।" मैंने कहा।

"अरे मैं लिए हूं आप तसला-कटोरी ले लीजिए।"

मैंने तसला-कटोरी उठा ली, "घड़ा भी ले लू ?" मैंने राइटर से पुकार कर पूछा।

"नही। घड़ा वहीं रहने दीजिए।"

हम बाहर आ गए। दूसरी बैरक के लोग भी बाहर आ गए थे। प्रभात और जयसिंह भी खड़े हुए थे। मुझे देखकर वे मुस्कराए।

"नीद आई थी रात ?" मैंने पूछा।

"हां, मैं तो खूब सोया।" जयसिंह ने कहा।

"और तुम ?" मैंने प्रभात से पूछा।

"हां ऽऽ। डिस्टर्ब रही नींद। कंबल में खटमल बहुत हैं।"

प्रभात सिगरेट पी रहा था, "सिगरेट फेंकना मत, एक फूंक मुझे

भी देना।" मैंने कहा।

उसने सिगरेट मेरी ओर बढ़ा दी।

"तुम्हारा कंबल तसला कहां है ?" मैंने पूछा।

"चलो जोड़े से बैठो जाओ।" राइटर चिल्ला रहा था।

हम लोग दो-दो की लाइन बनाकर बैठ गए। केवल हमारे पास ही कंबल, चादर, तसला, कटोरे आदि थे वरना। और लोगों के पास केवल तसला और कटोरा था। कुछ तसले में पानी भरे थे।

"यह पानी क्यों भरे हैं ?" मैंने पूछा।

"पता नहीं।" प्रभात ने कहा।

"आप भी ले लीजिए।" मेरे पीछे बैठे कैदी ने कहा, "अभी टट्टी हो आइए नहीं तो बड़ी गंदी हो जाएगी।"

"कहां है टट्टी ?" मैंने पूछा।

"वह बनी है।" उसने बैरक के पीछे की ओर इशारा किया।

मैंने देखा एक कतार में आठ-दस पाखाने बने थे।

गिनती शुरू हो गई थी। हम चुप हो गए। वही जमादार गिन रहा था, जो हमें इस बैरक में लाया था।

"यह आमदनी क्या होती है, जानते हो ?" मैंने प्रभात से पूछा।

"कैसी आमदनी ?"

"कल इसने हम लोगों को अंदर भेजते हुए कहा था न, लो चार आमदनी आई है।"

"हां, किसे कहते हैं आमदनी ?"

"जो नए कैदी आते हैं उन्हें आमदनी कहते हैं, जो छूट जाते हैं उन्हें खर्च।" प्रभात हंसने लगा।

"क्या तुम लैट्रीन जाओगे ?" मैंने उससे पूछा।

"मुझे तो बिना चाय पिये लैट्रीन होगी ही नहीं।"

"आदत तो मेरी भी नहीं है।" मैंने कहा।

सब उठकर खड़े हो गए थे। हम भी खड़े हो गए। प्रार्थना शुरू हो गई थी।

दो कैदी लाइन से अलग खड़े होकर प्रार्थना गा रहे थे—

"जै सिया राम, सीता राम हमारे।"

और सब दुहरा रहे थे।

आखरी लाइन तक पहुंचने के पहले ही काफी लोग तसले का पानी लेकर लैट्रीन की तरफ भाग गए।

लाइन टूट गई। मब इधर-उधर बिखर गए। कुछ ने अपने बिस्तर मैदान में दीवाल के किनारे बिछा दिए।

"हमें कहां जाना होगा ?" मैंने राइटर से पूछा।

"अभी आप लोग यहीं रहिए। अभी नौ बजे सब लोग बाहर जाएंगे। तब आप भी चलिएगा।"

हम लोग भी वही कंबल बिछाकर बैठ गए। मैंने रात की बची हुई सिगरेट निकालकर मुलगा ली। मित्तर इधर-उधर टहलने लगा था।

लैट्रीन से लौटकर लोग वहीं जमीन से मिट्टी खुरच कर अपने तसले मांजने लगे थे। खूब रगड़-रगड़ कर वे उन्हें चमका रहे थे।

"काफी मस्त है सब।" प्रभात ने कहा।

"मेरी बैरक में तो रात-भर गाना-बजाना होता रहा।" मैंने कहा।

"हमारे यहां भी हुआ।" उसने बताया।

"अच्छा, अब इन्हें देखकर डर नहीं लगता। शुरू मे जब हम लोग यहां आए थे तो कितने डरावने लग रहे थे सब।"

"मैं तो बिलकुल डर गया था।" प्रभात ने कहा।

"तुम नहीं डरे थे ?" मैंने जयसिंह से पूछा।

"अंदर ही अंदर दिल तो मेरा भी कांपने लगा था।"

"कहा नहीं तुमने ?"

"कहें क्या। मैंने सोचा अब जो होगा भगवान मालिक है।"

"चलो, बाहर चलो सब।" राइटर ने कहा।

हम समझ गए, यही हम लोगों का इमीजिएट बास है।

हम सब बाहर आ गए। वृत्ताकार स्थान का एक चक्कर हम लोगों को लगवाया गया। और बैरकों के कैदी भी यहां थे। गौतम और रशीद भी दिखाई दिए। हम लोग एक-दूसरे को देखकर मुस्कराए।

चक्कर में गिनती हो जाने के बाद हम सब फिर अंदर भेज दिए गए।

थोड़ी देर में चार आदमी दो बल्लियों में फंसाए हुए दो बड़े-बड़े बाल्टे लेकर वहां आए। सब अपने-अपने तसले लेकर उधर दौड़े।

"लाइन से आओ, लाइन से।" जमादार चिल्ला रहा था।

"यह क्या है ?" मैंने एक कैदी से पूछा।

"नाश्ता बंट रहा है।"

"क्या है नाश्ते में।"

"दलिया।"

"चलो, हम लोग भी ले लें।" मैंने प्रभात से कहा।

"चलो।"

"हम लोगों ने भी अपने-अपने तसले उठाए। फिर तसले रख दिए, कटोरे ले लिए।"

नाश्ता लेने में बड़ी उधम मची थी। बाज-बाज कैदी दुबारा ले रहे थे और बिना लाइन आए जा रहे थे। अपने किसी साथी का नाम लेकर डबल हिस्सा भी ले रहे थे कुछ।

"आप लोग इधर आ जाइए अभी दिला देता हूं," राइटर ने हम लोगों से कहा।

हम लोग किनारे हट गए।

"चलो लाइन से चलो।" उसने चिल्लाकर कैदियों को डांटा, "साले, बेइमान दुबारा लेने आ गया। चल लाइन में लग।" उसने भीड़ वहां से हटा दी।

उसका कोई विशेष रौब हो कैदियों पर ऐसी बात हमें नहीं लगी, लेकिन वे सब उसका कहना मान रहे थे।

भीड़ हटाकर उसने हम लगों से कहा, "आइए आप लोग पहले ले लीजिए।"

हम लोग दलिया लेकर कंबल पर आ गए। देखने में वह बहुत ही बदशक्ल था। परंतु जिस चाव से कैदी उसे खा रहे थे उसे देखकर मैंने सोचा खाने में जरूर मजेदार होगा।

हमने उसे तसलों से ढक दिया और घड़े के पानी से हाथ-मुंह धोया। उसके बाद मैंने कटोरा उठाकर मुह से लगाया, तो उसमें कोई जायका ही नहीं था। दूध तो खैर उसमें था ही नहीं मिठाई भी नाममात्र को ही थी।

"लो, खाओ।" मैंने मित्तर से कहा।

वह उंगली से चाटने लगा।

"तुम भी शुरू करो।" मैंने प्रभात और जयसिंह से कहा।

"उन्होने भी उंगली से खाना शुरू किया।"

"कोई चटनी तो है नही।" मैंने कहा, "मुह से लगाओ और पी जाओ।" और मैं दो-तीन घूट मुह में भरकर पी गया।

"यह तो बिल्कुल बेकार है।" प्रभात ने कहा।

"जो भी है सबमे पौष्टिक भोजन यहां का यही है। रोटी तो तुम देख ही चुके हो।"

"मैं नही खाऊंगा।" उसने कहा और कटोरा रख दिया।

"तो तुम खाओगे क्या? टोस्ट-मक्खन तो यहां मिलेगा नही।"

वह हंसने लगा।

मैं सारा कटोरा पी गया। जयसिंह ने भी समाप्त कर दिया था और उंगली से कटोरे की दीवारों को साफ करके चाट रहा था। मित्तर ने भी काफी छोड दिया था।

"क्यो भाई तुम्हारा तो राष्ट्रीय भोजन है, तुमने क्यो छोड दिया? चाय तो तुम पीते नही।" मैंने मित्तर से कहा।

"तुम बहुत शरारती हो।" उसने दांत निकाल दिए।

"अरे पी लीजिए मित्तर जी। रोटियां तो आपसे कटेंगी नहीं।" जयसिंह ने कहा।

"रख दिया है, अभी थोड़ी देर में खाऊंगा।" उसने कहा। वह गंभीर हो गया था।

मैंने कटोरे में पानी पीकर उसे साफ करके रख दिया।

"देखो, आज शायद कोई आए।" जयसिंह ने कहा।

"आए तो कल भी होंगे। मिलने नही दिया होगा।" मैंने कहा, "क्यों प्रभात?"

"जरूर आए होंगे। न आए हों ऐसा हो नहीं सकता।"

"आज मिलने देंगे?" मित्तर ने पूछा।

"आज मुलाकात का दिन नहीं है।" मैंने कहा।

तभी एक नंबरदार हम लोगों की ओर आता हुआ दिखाई दिया।

"बी० पी० श्रीवास्तव कौन है?" उसने हमारे पास आकर पूछा।

उसके हाथ में टंगे झोले को मैंने पहचान लिया। मेरे घर का था।

"मैं हूं।" मैंने कहा।

"यह लीजिए आपका सामान आया है। लिस्ट से मिला लीजिए" उसने थैला और कागज का एक टुकड़ा मेरी ओर बढ़ा दिया।

मैंने थैले का सामान निकाल कर देखा। मंजन, ब्रुश, तौलिया, साबुन, तेल, कंघा, अखबार और चार पैकेट चारमीनार थे।

"चलो सिगरेट आ गई। यह बड़ा अच्छा हुआ।" मैंने कहा और लिस्ट से सामान मिलाने लगा।

उसमें एक माचिस भी लिखी थी जो थैले में नहीं थी। "माचिस कहां है।" मैंने नंबरदार से पूछा।

"माचिस अंदर लाने की इजाजत नहीं है।" उसने कहा।

"कागज की दूसरी तरफ लिख दीजिए। सामान मिल गया।"

"कलम कहां है?"

उसने मुझे पेंसिल दी। मैंने लिख दिया और यह भी लिख दिया कि कल जब आए तो कुछ किताबें और पत्रिकाएं आदि लेता आए।

मित्तर अखबार पढ़ने लगा।

"हम लोगों के बारे में निकला है।" उसने कहा।

"देखें।"

हम लोग अखबार पढ़ने लगे। प्रभात सिगरेट पीने लगा।

"आपका सामान आ गया न?" रमेश ने आकर पूछा।

"हां।"

"मैं कह रहा था न। क्या-क्या आया?"

उसका मेरे सामान में इतनी रुचि लेना मुझे पसंद नहीं आया।

"यही साबुन मंजन, वगैरह।"

वह चुप हो गया। फिर बोला, "सिगरेट नहीं आई ?"

"हां, आई है।" मैंने उसे एक सिगरेट दे दी। सिगरेट लेकर वह वहीं खड़े होकर पीने लगा।

"इसके माने आज मुलाकात नहीं होगी।" मैंने कहा। हम लोग वहीं की भाषा बोलने लगे थे।

"लगता तो यही है।" प्रभात ने कहा।

"जाइए आप लोगों का बुलावा आ गया।" राइटर ने आकर हम से कहा।

"कहां के लिए ?"

"डाक्टरी होगी।"

"कहां जाना होगा ?"

"यह आदमी ले जाएगा ?"

"सामान भी ले जाना होगा।"

"हा, सब।"

"यह सामान, जो घर से आया है ?"

"इसे यही छोड़ दीजिए। लाइए हमें दे जाइए।"

मैंने थैला उसकी ओर बढ़ा दिया। वह थैले में हाथ डालकर देखने लगा। यह हमें अच्छा नही लगा। परंतु मैंने कुछ कहा नहीं।

"सिगरेट नही आई ?"

"आई है।" मैंने एक पैकेट जेब से निकालकर उसे दिया, "लीजिए यह एक पैकेट आप रख लीजिए।"

"नही, नही, आप रखिए एक पैकेट। मुझे बस एक पिला दीजिए।"

"आप पूरा पैकेट रखिए।" मैंने कहा।

"इस तरह न कीजिए यहां नहीं तो एक भी सिगरेट नहीं बचेगी। बस एक मुझे दे दीजिए।"

"आप पूरा पैकेट रखिए।" मैंने कहा।

"नही, इतनी मुझे नही चाहिए। इसी थैले में आपके रखी है।" उसने एक सिगरेट निकालकर पैकेट थैले में डाल दिया।

"आपका सामान सब हिफाजत से है, आप फिकर न कीजिए।" हम लोग चलने लगे तो उसने कहा।

जहां पहली बार रजिस्टर में वर्मा के पास हमारा नाम नोट हुआ था हमें वहीं लाया गया। गौतम और रशीद वहां पहले से बैठे थे। कुछ और दूसरे कैदी भी थे।

हमें जमीन पर बिठा दिया गया सामने एक मेज और कुर्सी पड़ी थी उसी के बगल में एक वजन करने वाली मशीन और ऊंचाई नापने वाला लकड़ी का चौकोर पोल रखा था।

थोड़ी देर मे एक व्यक्ति उस कुर्सी पर आकर बैठ गया और बारी-बारी से एक-एक को बुलाने लगा। हमने अनुमान लगाया यही डाक्टर है।

हमने देखा, कुछ कैदियों के शरीर में जख्म के निशान थे। वे उन्हें डाक्टर को दिखा रहे थे। शायद पुलिस ने उन्हें मारा था।

"आर यू ओके?" प्रभात ने गौतम से पूछा।

"यस योर आनर बाडी, माइंड आल ओके। ओनली फादर स्माल ट्राबुल।" गौतम ने कहा।

"फादर को क्या हो गया?" मैंने पूछा।

"फादर को जरा मदर की याद आ रही थी, कबाब-वबाब खाने को नही मिला न?"

"खाना मिला था तुम लोगों को कल?"

"यस योर आनर्स, आपको?"

"हमें नहीं मिला।"

"तुमको कहा से मिला?" प्रभात ने पूछा।

"हम लोग एक नंबर में थे न।" रशीद ने कहा, "बाहर सब गन्ने वाले थे। उनका खाना आया था उसी में से उन्होंने दिया था हम लोगों को।"

"क्या था खाने में?"

"चावल, रोटी, सब्जी, दाल।"

"यस वेरी फाइन चावल। बासमती।" गौतम बोला।

"और सब्जी काहे की थी।"

"लौकी, शोरबेदार।"

"हम लोग तो भूखों मर गए।" मित्तर ने कहा।

"चाय मिली आपको?" गौतम ने पूछा।

"नही।"

"कहा फस गए आप लोग। हम और फादर एक-एक तसला चाय पीकर आ रहे है।"

"कहां से मिली?"

'गन्ना कामदार सघ जिदाबाद। बगल वाली बैरक मे ही तो वे लोग हैं। सीखचो से माल पास होता है। दे आउट साइड, वी इन साइड।"

मित्तर को डाक्टर ने बुला लिया था। वजन आदि हो जाने के बाद वह उसमे कुछ और बात करने लगा था।

"डोट वरी मी लार्ड", गौतम ने कहा "हम लोग फिर वही आ जाएगे।"

"कहा?"

"जहा कल दिन मे थे। दो नबर मे।"

"कैसे।"

"गन्ना वालो ने विश्वनाथसिंह से कहा है। विश्वनाथसिंह भी यहा है न।"

"विश्वनाथसिंह एम० पी०?"

"जी हा, आपने सुना नही, रात मे नारे लगा रहे थे सब।"

"किसलिए?"

"यही कि हम लोगो के साथ इजस्टिस हो रहा है।"

"तुम्हे कैसे पता?"

"शाम को वह आए थे। हमसे और फादर से बात हुई थी ओनली वी इनसाइड ही आउट साइड। रोज वहा आते हैं। भाषण होता है उनका वहा।"

तब तक गौतम की बारी आ गई थी।

"कमिग योर आनर्स।" वह उठकर डाक्टर के पास चला गया।

"तुम डाक्टर से क्या बात कर रहे थे?" प्रभात ने मित्तर से पूछा।

"वह पूछ रहा था कैसे बद हो गए हम लोग।"

"तुमने बताया ?"

"हां।"

"यह नहीं कहा कि हम लोग बेकसूर हैं ?" मैंने कहा।

"कहा।"

प्रभात मुसकराने लगा।

"और कुछ बात नहीं हुई ? जमानत के लिए नहीं कहा ?"

वह मेरे ऊपर बिगड़ गया।

डाक्टरी हो जाने के बाद हम फिर अपनी बैरक में वापस आ गए।

दूर ही से हमने देखा, एक व्यक्ति साफ खद्दर का कुर्ता-पाजामा पहने बैठा कुछ कैदियों से बातें कर रहा था। उसके बाल खिचड़ी थे और चेहरे पर छोटी-सी दाढ़ी थी।

"आइए, आइए।" हम लोग करीब पहुंचे तो उसने हमसे कहा, "आपकी चाय ठंडी हो रही है।"

मैंने देखा, उसकी बगल में एक बाल्टी रखी थी, जिसमें चाय रखी थी। उससे अब भी धुआं निकल रहा था।

हमने कंबल वही रख दिए और कटोरों मे चाय लेकर पीने लगे। मित्तर ने नहीं लिया।

"क्यों आप नहीं लेंगे ?"

"यह चाय नही पीते।" मैंने कहा।

मित्तर चुप रहा।

चाय काफी ठंडी हो गई थी फिर भी चाय थी।

उस व्यक्ति ने हमें बताया कि वह स्थानीय कम्युनिस्ट पार्टी का सेक्रेटरी था और अन्य राजनैतिक कैदियों के साथ वहां बंद था। उसका नाम था, मुहम्मद आरिफ।

"आप लोगों को कोई तकलीफ तो नहीं हुई ?" उसने पूछा।

"नहीं।"

"शाम तक शायद आप लोग वहां वापस चले जायें। कल रात ही हम लोगों ने मीटिंग की थी", उसने बताया, "आज विश्वनाथसिंह जी जेलर से बात करेंगे। पता नहीं आप लोगों को क्यों यहां भेज दिया ? आप लोगों

की सुपरिंटेंडेंट से कुछ बहस हुई थी क्या ?"

"बिलकुल नही।" प्रभात ने कहा, "वह हम लोगो के पास आया ही बडे गुस्से मे था पता नही क्या बात थी हमारे कबल भी बदल दिए। दो की जगह एक दिया, वह भी पुराना और फटा। पता नही कितने तो उसमे खटमल है।"

"सुपरिंटेंडेंट है ही पाजी। जेलर अच्छा आदमी है। देखिए इशाल्ला आज शाम तक सब ठीक हो जाएगा।"

"बडी कृपा होगी आपकी।" मित्तर बोला।

"शाम को मैं इधर आऊगा", उसने चलते हुए कहा। उसके साथ एक और व्यक्ति था। उसने बाल्टी उठा ली।

प्रभात तसले मे पानी लेकर लैट्रिन की ओर चला गया। हम लोगो ने भी वही कम्बल बिछा लिए हालाकि अब धूप नीचे उतरने लगी थी।

प्रभात तुरत लौट आया।

"हो आए लैट्रिन ?" मित्तर ने उससे पूछा।

वह मुह सिकोडने लगा, "बहुत गदा है। मुझे तो यहा लैट्रिन हो ही नही सकती। उफ्।"

"फिर क्या करोगे ?" मैने पूछा।

"जो भी हो मै यहा लैट्रिन नही जा सकता। लगता है तीन-चार दिन से साफ नही हुई है।"

राइटर वही आ गया था, "आप लोग अभी रुक जाइए। अभी भगी आता होगा साफ करने। उसके बाद जाइएगा।" उसने कहा।

हम अखबार लेकर देखने लगे।

मैंने देखा एक और नबरदार थैला हाथ मे लेकर हम लोगो की ओर आ रहा था।

"अब किसका सामान है ?" मैंने कहा।

"प्रभात कुमार बनर्जी कौन हैं ?" उसने पूछा।

"मैं हू", प्रभात ने थैला ले लिया। थैले मे दो-तीन पैकेट थे। एक थर्मस भी था। थर्मस मे चाय थी। पर्चे मे लिस्ट बनी थी प्रभात ने ऐसे ही थैले के पैकेटो को उठाकर देखा और लिस्ट से सामान मिला लिया।

केवल एक पैकेट उसने खोला उसमें आठ डिब्बी सिगरेट थीं।

"चलो कल तक के लिए सिगरेट हो गई।" मैंने कहा।

प्रभात ने लिस्ट पर सामान प्राप्त किया। लिखकर हस्ताक्षर किया और कागज उसे वापस कर दिया।

"कौन आया है ?" मैंने पूछा।

"बड़े भाई।" उसने कहा।

थर्मस से चाय उंडेलकर हम लोग चाय पीने लगे। राइटर को भी पिलाई। इस बार एक पैकेट सिगरेट हमने उसे जबर्दस्ती दे दिया।

थोडी देर में हम लोग फिर बैरक में आ गए। बाहर धूप काफी तेज हो गई थी। भंगी ने लैट्रिन साफ कर दी थी। हम लोग लैट्रिन गए। फिर नहाए।

प्रभात और जयसिंह का बिस्तर उनकी बैरक में था परंतु वे हमारी ही बैरक में बैठे रहे। राइटर ने हमें बताया था कि बैरक अब दो बजे बंद होगी।

हम नहा रहे थे तभी रोटी परेड शुरू हो गई। बडे-बड़े बाल्टों मे दाल और सब्जी और एक काफी बड़ी परात में रोटियां बंट रही थीं। रोटी लेने के लिए भी वही मार-काट थी। जयसिंह नहा चुका था। उससे मैंने कहा कि वह सबका हिस्सा ले ले।

मैं नहाकर चलने लगा तब तक रमेश नहाने आ गया था, "जरा अपना साबुन दे दीजिए।" उसने कहा।

अब उससे मुझे चिढ़ होने लगी थी, "लो।" मैंने साबुन उसे दे दिया और बैरक मे चला आया।

"आपके लिए मैंने चबूतरा खाली करवा दिया है।" राइटर ने कहा।

"क्यों। किसीको जमीन पर भेज दिया क्या ?"

"नहीं रिहाई हो गई उसकी।"

जो चबूतरा उसने मुझे दिया था वह उसके चबूतरे के काफी निकट था। मैंने उस पर बिस्तर लगा लिया। मित्तर को भी मैंने एक दूसरे आदमी से एक्सचेंज करवाकर अपने बगल में बुला लिया।

रमेश खूब साबुन मलकर नहा रहा था। नहाने के लिए एक काफी

बड़ा पक्का चबूतरा-सा दोनों बैरकों के बीच बना था जिसमें छोटे-छोटे कई हौज बने थे।

नहाने के बाद मैंने देखा वह अपने कपड़ों में साबुन लगा रहा था। मैंने कुछ कहा नही। इसके बाद उसी साबुन से एक लड़के ने और नहाया।

जब साबुन मुझे वापस हुआ तो आधा घिस चुका था।

जयसिंह ने खाना लाकर ढक दिया था। हम लोग बैठे आराम कर रहे थे।

तभी जमादार आकर रमेश को पीटने लगा। बहुत बुरी तरह से वह उसे डंडे से मार रहा था।

"इसे क्यों पीटा जा रहा है ?" मैंने राइटर से पूछा।

"चोरी की है इसने।"

"लेकिन यहा तो और चोर भी है।"

"नही। यही बैरक में चोरी की है।"

"किसकी ?"

"वह बाबा जी के बगल मे जो आदमी है न, उसकी।"

"क्या चुराया है ?"

"दो रुपये और गुड़।"

"कहा था।"

"थैले में।"

"जमादार को मना कर दीजिए अब न पीटे।" मैंने कहा।

"अरे आप जानते नहीं, बड़ा साला चोर है। आप भी बच के रहिएगा आपके बहुत पीछे लगा है।"

"मेरे पास क्या है, चुराने वाला।"

"क्या है ?" उसने प्रभात के थैले में हाथ डाल दिया। यह बिस्कुट का डिब्बा एक मिनट में साफ हो जाएगा।

मैं थोड़ी देर चुप रहा। तब प्रभात से बोला, "लो भाई यह बिस्कुट खोलो कुछ नाश्ता किया जाए।"

पैकेट मैंने प्रभात की ओर बढ़ा दिया।

प्रभात ने पैकेट खोलकर सबको दो-दो बिस्कुट दिए। दो राइटर को

भी दिए।

"आप लोग खाइए।" उसने कहा।

"लीजिए, लीजिए।"

"उसने ले लिया।"

जमादार रमेश को पीटकर चला गया था। वह खड़ा-खड़ा जमादार को गालियां दे रहा था।

"इधर आओ।" मैंने उसे बुलाया।

वह आ गया।

"लो।" मैंने उसे एक बिस्कुट दिया।

"नही, आप खाइए।"

"ले बे, साले, चोरी करेगा और फिर नखरे दिखाएगा।" राइटर ने कहा।

"मेरे मुंह न लगना नहीं तो अभी बताऊंगा तुमको भी।" उसने बिस्कुट ले लिया।

"मुझको क्या बताएगा।" राइटर ने चप्पल निकाल ली।

"चलो, चलो। अच्छा जाओ।" मैंने उससे कहा। राइटर ने चप्पल फिर जमीन पर डाल दी। रमेश चला गया।

"अब यह रखे रहिए, "राइटर ने शेष बिस्कुटों के लिए कहा, "शाम को चाय बनाऊँगा उसके साथ खाए जाएंगे।"

कुछ लोगों ने खाना खाना शुरू कर दिया था।

"आपने खाना खा लिया ?" मैंने राइटर से पूछा।

"अभी नहीं। आपने खा लिया क्या ?"

"नहीं।"

"अभी रुक जाइए। देखिए चटनी पिसवाता हूं। क्यों बे रामपती कहां गया ?" उसने आवाज लगाई।

रामपती आ गया।

"निकाल बेटा मेरे थले से अमियां और प्याज जरा। बना बढ़िया-सी चटनी।"

वह उठकर चटनी बनाने चला गया।

चटनी बहुत अच्छी बनी थी। जिस चबूतरे पर हम सोते थे, उसीको धोकर उसी पर एक शंकर जी के बट्टेनुमा पत्थर से पीसी गई थी। नमक-मिर्च-प्याज आदि राइटर के झोले मे थे। आम छीलने के लिए टीन की एक पत्ती को घिस-घिसकर तेज कर लिया गया था।

खाना हमारे चबूतरे पर खाया गया। राइटर को भी हमने अपने साथ बुला लिया था। वैसे वह कुछ और कैदियो के साथ खाया करता था। खाना खाकर हमने सिगरेट पी। दो-एक सिगरेट हमने अगल-बगल वाले कैदियो को भी दी। सिगरेट पाकर वे जैसे कृतार्थ हो गए।

इसके पश्चात् हम आराम करने लगे। डेढ बजे के लगभग फाटक बंद हो गया। प्रभात और जयसिह को हमने इसी बैरक मे रोक लिया। राइटर ने बताया था कि दिन मे एक बैरक का कैदी दूसरी बैरक मे रह सकता है। फाटक बद होने से पूर्व गिनती परेड हुई। परतु आज हमे पंक्ति मे नही बैठना पडा। राइटर ने कहा हम लोग वही बैठ रहे चबूतरे पर। किसी ने कोई आपत्ति नही की। जमादार ने भी नही। जमादार के जाने पर राइटर ने कहा, एक-दो रुपया आप इसको दे दीजिए फिर चाहे जो कीजिए। यही खाना पकाइए, चाय बनाइए। शराब-कबाब करना हो तो वह भी कीजिए।"

"शराब यहा कहा से आ जाएगी?" मैंने पूछा।

"सब आ सकता है। पैसे चाहिए बस। आप देखना चाहते है।"

"नही।" हमसे कहा।

रात वाले अफीमची को सुबह मार्फिया का इजेक्शन दे दिया गया था। वह अभी तक बेहोश पडा था।

बैरक के अंदर भी कुछ-कुछ गर्मी होने लगी थी। राइटर ने हमे दूसरे कैदियों से पंखे लाकर दे दिए थे।

बीच मे एक बार मोतीलाल आया था। कोई पाच मिनट के लिए। उसने बताया कि डिप्टी जेलर उस पर बहुत बिगड रहा था कि आप लोगों को नए कबल क्यो दे दिए गए ?

हमने उसे अपने कंबल दिखाए।

"यह कंबल तो बेकार हैं। किसीको दिए नही जाते। पता नही आप लोगो से क्यो नाराज हो गए। इसमे कोई-न-कोई बात जरूर है।" उसने

कहा।

क्या बात हो सकती है हमने सोचा। परंतु किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंच सके।

"सुना है किसीका टेलीफोन आया था?" मोतीलाल ने बताया।

"किसका टेलीफोन?" प्रभात ने पूछा।

"पता नहीं वैसे सुपरिंटेंडेंट कभी राउंड पर नहीं निकलता। सिर्फ परेड वाले दिन जाता है। आखिर वह खासकर आप लोगों की बैरक में क्यों गया? खैर", उसने कहा, "आप लोग फिक्र न कीजिए। यहां भी आपको कोई तकलीफ नहीं होगी। मैं बीच-बीच में आता रहूंगा।"

बैरक बंद हो जाने के बाद हम लोग एक-दो घंटे तक सोये। एक चबूतरे पर दो-दो व्यक्ति लेटे थे, जिससे कुछ असुविधा हो रही थी। परंतु हम रात के जगे थे और थके थे। हमें नींद आ गई।

मैं अधिक देर सो नहीं सका। गर्मी बहुत लग रही थी। फिर प्रभात की टांगें मेरे सिर पर आ रही थीं। मैं उठकर बैठ गया। प्रभात पसीने से तर पड़ा था। मैं उसके पंखा करने लगा।

जयसिंह भी जाग गया था और बैठा सिगरेट पी रहा था। मित्तर मुंह में तौलिया लपेटे करवट लिए लेटा था। मैंने देखा और कैदी भी लेटे आराम कर रहे थे।

कोई चार बजे प्रभात भी जग गया। राइटर हमारे पास आया। "कहिए आराम हो गया?" उसने पूछा।

"हां।" मैंने कहा, "आज आपका आमदनी-खर्च कैसा रहा?"

"दो खर्च हुए आज। एक तो जो कल इस पर लेटा था जिस पर आप लेटे हैं। एक और।"

"सजा खतम हो गई क्या?"

"सजा अभी कहां। यह तो सब हवालाती हैं। जैसे आप हैं। अभी जमानत पर छूटे हैं।"

"अच्छा। और आमदनी क्या हुई आज।"

"आमदनी अभी क्या पता। उसी वक्त आएंगे शाम को।',

मैं चुप हो गया।

"चाय बनवाई जाए आप लोगों के लिए ?"

"क्यों आप नहीं पीजिएगा ?"

"मैं तो पीता नहीं। वैसे आप लोगों के साथ में थोड़ी पी लूंगा।"

"हां, चाय बननी चाहिए।" जयसिंह ने कहा।

"देखिए अभी मिनटों मे इंतजाम करता हूं।" उसने कहा और किसी कैदी को आवाज देने लगा।

"तेरा चूल्हा क्या हो गया ?" वह आया तो उसने पूछा।

"सुबह जमादार ने फोड दिया।"

"फोड दिया तो क्या हुआ। दूसरा बना। जलाकर जरा पानी चढा चाय के लिए।"

"अभी लो।" वह चला गया।

"सुन, कहां बनाएगा ?"

"जहां कहो।"

"यहीं इस दीवाल के सहारे बना।"

"वह तुरंत एक घडा तोडकर ले आया।"

"यह जलाएगा क्या इसमें ?" मैंने पूछा।

"जलाने के लिए कमी है क्या किसी चीज की। यह कंबल पट्टा किस दिन काम आएगा।"

"कंबल ?"

"अजी इसमे कमीजें, बनियानें जल जाती हैं। वैसे बाहर से लकड़ी भी बटोर लाते है यह सब। क्यों बे, ज्वाला, लकडी है कि नही ?"

"लकड़ी कहां ! सुबह चूल्हा ही फूट गया तो मैंने जमा ही नही की।"

"अच्छा देख, फिर पट्टा-वट्टा निकाल कही से।"

मैंने देखा वह चटाइयो और कंबलो के टुकड़े कही से बटोर लाया था। पुराना कपडा भी कुछ था। चूल्हा जलाकर उसने तसले में पानी चढ़ा दिया।

"आप यहां पहली बार आए हैं ?" मैंने राइटर से पूछा।

"मुझको यह छठी बार है।"

"छठी बार।"

"हां।"

"आपकी जमानत ?"

"जमानत मैं करवाता ही नहीं।" आपसे बताया न दरोगा से मेरी दुश्मनी है। बाहर निकलूंगा तो फिर कहीं फांस देगा। पांच बार से यही हो रहा है। अब तभी जमानत कराऊंगा जब उसका ट्रांसफर हो जाएगा वहां से।'

बिना दूध की चाय ने काफी मजा दिया। साथ में हमने बिस्कुट भी लिए। राइटर और ज्वाला को भी दिए।

"कैसी बनी चाय ?" राइटर ने पूछा।

"बहुत उम्दा।" हमने उत्तर दिया।

"मेरी पत्ती एक बार के लिए और रह गई है। कल कोई मिलने आए, तो उससे कहिएगा थोड़ी चाय और शक्कर भिजवा दे।" उसने कहा।

"कंडेस्ड मिल्क भी मंगा लेंगे।" प्रभात ने कहा।

"कंडेस्ड मिल्क आ जाए तो फिर क्या कहना।" राइटर ने कहा, "परसाल यह एक मौलाना साहरी बंद थे 'हमदर्द' के एडीटर हैं जो। उनका इंतजाम देखने वाला था। कंडेस्ड मिल्क, बुक ब्रांड का बंडल, अंडा, मक्खन, टोस्ट, सब रहता था। मैं बताऊं आपको, उनको बी-क्लास मिल गया था मगर वह गए नहीं। कहने लगे, मैं यहीं रहूंगा। जेल की जिंदगी तो यहीं है। इत्ते मोटे-मोटे तीन-चार रजिस्टर लिखकर ले गए हैं। कहते थे सब अपने अखबार में छापेंगे।

"बहुत काबिल आदमी थे। यहां से गए हैं जिस दिन उस दिन जितना सामान उनके पास था यहीं सबको बांट गए। दर्जनों तो सिगरेट के पैकेट बांटे होंगे। तेल, कंघा, शीशा, साबुन, कुछ नहीं ले गए। पच्चीस रुपये दिए थे जमादार को जाते वक्त। हमको भी पच्चीस रुपये दे रहे थे। मैं ले नहीं रहा था। बहुत जिद की उन्होंने, कहने लगे मैं जाऊंगा ही नहीं यहां से। आखिर जब नहीं माने तो मुझे लेने पड़े।"

हमने उसकी बात का कोई उत्तर नहीं दिया।

"आप लोग रहिए तो यहां, फिर देखिए क्या इंतजाम करता हूं मैं। लेकिन आप लोग तो रहेंगे ही नही यहा।"

"क्यो।"

"वह मौलाना सुबह कह रहे थे न।"

"हा, देखिए शाम को पता चलेगा।"

"कौन दफाए हैं आप लोगों पर।"

"३३२, ३४७, ३३५ और क्रिम्नल ला अमेडमेट एक्ट की धारा सात।"

"वैसे भी आपकी जमानत हो जाएगी।"

"जमानत नही होगी", मैंने कहा, "हम लोगो की आइडेंटीफिकेशन होनी है।"

"आइडेंटीफिकेशन क्या ? शिनाख्त ?"

"हा।"

"तब तो मुश्किल है।"

"शिनाख्त मे कितने दिन लग जाते हैं ?" मित्तर ने पूछा।

"दो-चार दिन मे भी हो जानी है और न होने को तीन महीने तक न हो। तीन महीना तेरह दिन की मियाद होती है। उमी के अंदर हो जानी चाहिए। यहा कई लोगो की शिनाख्त होनी है। वह, उस दढियल को देख रहे है आप। दो महीने से ऊपर हो गए उसे। इसी शिनाख्त की वजह से पडा है।"

"किस जुर्म मे आया है।"

"डकैती।"

"डाके वाले यहां अधिक है ?"

"नही, सभी हैं। वह बीच वाले चबूतरे पर जो कल ताश खेल रहे थे सब गिरहकट हैं। आपसे बात करते रहेंगे और आपकी जेब से पर्स गायब। आपको हवा भी नही लगेगी।"

"फिर पकडे कैसे गए।"

"यह न कहिए बडे-बडे पकड जाते हैं। और फिर जब साले बाहर बोर होने लगते हैं तो दो-चार महीनो का फेरा कर जाते हैं।"

"बाहर बोर होने लगते हैं।"

"जी हां, आप क्या समझते हैं। जेल जन्नत है इनके लिए। बाहर तो इनके लिए ऐसे हैं जैसे लोग परदेस जाते हैं कुछ दिनों के लिए। जेल की रोटी आपको मजा नहीं देती। इनसे पूछिए। सुबह देखा नहीं था आपने कैसे टूटते हैं साले।"

"लेकिन अगर कोई न पकड़ा गया तो?"

"पकड़ा कैसे नहीं जाएगा। सब हुनर होता है नहीं पकड़े जा रहे हैं तो क्या करेंगे, जिधर से गश्त आ रही है देख लिया, बस उसी तरफ चल दिए जेब में मोमबती, कील और माचिस डाल ली। लगे किसी दीवाल में ठोकने। बस पुलिस वालों ने देखा, पूछा क्या कर रहा है बे? थोड़ा इधर-उधर आगे-भागे और पकड़े गए।"

"वाकई?"

"आप यकीन नहीं करते? पुछवा दूं अच्छा। अबे रहमत इधर आ जरा।" उसने आवाज दी।

रहमत आ गया। दुबला-पतला चिमरखी की तरह आंखें। चांद करीब -करीब घुटी। फटा पाजामा और बनियाइन।

"क्यों क्या हुआ था, अब की कैसे आया यहां। जरा बाबू जी को बता।"

रहमत पहले तो झेंपा फिर जमीन पर बैठ गया, "वो बाबू जी बाहर जी परेशान हो जाता है। घर में औरत-बच्चे सब जान खाने लगते हैं। यहीं लौट के आ गया।"

"कैसे आए?"

"तीन सौ अस्सी में।"

"क्या हुआ था?"

"हुआ क्या। सड़क पर गश्त आ रही थी। मैंने देखा। जहां पास आए। मैं दनादन बिजली के खम्भे पर चढ़ गया। पुलिस नीचे आकर रुक गई। उतारा, पूछा, 'क्या कर रहा था? पोल पर क्यों चढ़ा?'

"मैंने कहा, 'हजूर, बल्व निकाल रहा था?'

"वह बिगड़े, बोले, 'बल्व क्यों निकाल रहा था?'

"मैंने कहा, 'बेच के कुछ लेके खाऊंगा।' बस पकड़ लिया। दो-तीन डंडे मारे। अंदर हो गया।"

"अजी मैं आपको बताता हूं श्रीवास्तव साहब, आधे कैंदी यहां ऐसे हैं जो साल में आठ महीने अंदर रहते हैं", राइटर ने कहा, "बस यहां से छूटे, दो-एक जगह चोरी-चमारी की, सनीमा देखा, होटल बाजी की, पिया-खाया, मौज-मस्ती की, घर मे कुछ रुपया रखा और चले आए। जेल को ससुराल कहते हैं गलत नही कहते। खाना, कपड़ा, नाश्ता, बिछौना, बर्तन, भाडा सब तो मिलता है। सुबह जितने बजे नाश्ता मिलता है, उतने बजे घर में किस साले की नसीब होता है। खा-खा के सब यहा डंड पेलते हैं।"

प्रभात दार्शनिक मूड मे आ गया था। बोला, "बाहर की लिविंग कंडीशंस और यहा की लिविंग कडीशंस में जब तक इतना अंनर रहेगा, यह होगा ही।"

राइटर उसकी बात नही समझा। उसका मुह ताकने लगा। मित्तर को कुछ ऐसी कपकपी आई जैसे उसे बिजली का तार छू गया हो।

फाटक खुल गया था। बाहर फिर दोनो बैरको की गिनती परेड हुई।

"मै तो इस गिनती परेड से आजिज आ गया हूं।" प्रभात ने कहा।

"गिनती," राइटर ने हमे बताया था, "जेल का सबसे सख्त नियम है। एक बार कैदी मर जाए तो कोई बात नही, लेकिन अगर गिनती में कम पड गया, यानी भाग गया कही, तो समझिए बस आफत है।"

गिनती के बाद काफी देर तक हम बाहर अहाते मे ही घूमते रहे। फाटक के बाहर जाने की हमे आज्ञा नही थी। वैसे अहाते का फाटक प्रायः खुला रहता था। परंतु एक चौकीदार वहां सदा पहरा दिया करता था। केवल वही कैदी बाहर जाते थे जिन्हे काम पर, जैसे पानी आदि भरने के लिए भेजा जाता था।

हम काफी समय तक आरिफ साहब की प्रतीक्षा करते रहे। परंतु वह आए नहीं। हमें लगा, यह रात भी हमे इसी बैरक मे काटनी होगी।

"ऐसा नहीं हो सकता कि प्रभात और जयसिंह भी इसी बैरक में आ

जाएं ?" मैंने राइटर से पूछा।

"हां हां। हो क्यों नहीं सकता। यह तो मेरे ऊपर है, चाहे जो जिस बैरक में रहे।"

"तुम फिर कुछ गड़बड करोगे।" मित्तर ने कहा।

"ऐसे ही रहने दो।" प्रभात ने भी कुछ आनाकानी की।

मैंने फिर जोर दिया प्रभात पर। परंतु वह राजी नहीं हुआ।

"कल से देखा जाएगा।" उसने कहा।

"कल से सही। जब आपकी मर्जी हो।" राइटर ने कहा।

"जमादार कोई आपति नहीं करेगा ? उस साले को क्या है, चाहे जो कीजिए बस एक-दो रुपये दे दीजिएगा उसे।"

इस बीच रोटी परेड हो चुकी थी। हमने अपना खाना ले लिया था। वही खाना था जो सुबह मिला था। पांच बड़ी-बड़ी रोटियां, पानी जैसी दाल और बिना मसाले और चिकनाई के पातगोभी की सब्जी, जिसमें पातगोभी के पत्ते पांच तो पानी एक किलो।

परंतु आज खाना देखकर हमें उतनी अरुचि नहीं हुई जितनी कल हुई थी। बैरक बंद होने से पहले ही हमने खाना खा लिया। खाना खाने के पश्चात् कुछ देर के लिए मैं प्रभात की बैरक में गया। उसकी बैरक मेरी बैरक की अपेक्षा कुछ लंबी थी। उसमें कैदी भी अधिक थे। प्रभात का चबूतरा बनर्जी के बगल में था। बनर्जी काफी संजीदा व्यक्ति लगा मुझे। बातों से पढ़ा-लिखा भी मालूम होता था। उसने हमें सिगरेट पिलाई और कुछ देर हम वहीं बैठे बातें करते रहे। उस बैरक में उसका काफी रौब लगा मुझे। सारे कैदी उसे 'दादा' कहते थे।

आरिफ साहब नहीं आए। बैरक अपने समय से बंद हो गई। बैरक बंद होने के पहले फिर गिनती हुई। गिनती करते समय जमादार ने फिर रमेश के दो-तीन डंडे जड़ दिए। नाहक। रमेश भी काफी जिद्दी लगा मुझे। उसने जमादर के जाते ही उसे गालियां देनी शुरू कर दीं, बताऊंगा साले तुझे, उसने उसे पीठ पीछे धमकी दी। बैरक बंद होने के पश्चात् कुछ देर तक काफी शोरगुल रहा, फिर सब अपने-अपने ठिकाने लगने लगे। बाबाजी ने कीर्तन शुरू कर दिया। गिरहकटों की टोली में ताश होने लगी। एक तरफ फिल्मी

गाने होने लगे।

"कल जो कैदी गाना गा रहा था वह आज मुझे नहीं दिखा।"

"कल जो गाना गा रहा था वह कहां गया ?" मैंने राइटर से पूछा।

"कौन? अच्छा वह दौरे पर रहता है। आज किसी और बैरक में होगा।'

"दौरे पर ?"

"हां, जिन कैदियों के भाग जाने का डर होता है, उन्हें दौरे पर रख देते है। रोज उनकी बैरक बदलती रहती है।"

"लेकिन वह भागने वाला तो नहीं लगता।"

"उस पर कई केस है।"

"तो इससे क्या हुआ ?"

"अकसर ऐसा होता है कि जब किसी कैदी पर केस चलते होते हैं तो वह घबराकर भागने की बात सोचने लगता है।"

मुझे लगा राइटर ही यहां का सबसे पुराना कैदी है।

"एक सौ नौ हवालाती बंद, ताला, जंगला, बत्ती, ठीक आठ नंबर।"

आवाज शुरू हो गई थी।

आज की संख्या कल की संख्या से एक कम थी।

"कल शायद कोई मिलने आए ?" मित्तर ने कहा।

"हो सकता है।"

"हम लोगों की जमानत का क्या होगा ?"

"क्यों यहां तुम्हें अच्छा नहीं लगता ?" मैंने पूछा ?

"मजाक का समय होता है। हर समय मजाक अच्छी नहीं लगती।" वह गंभीर होने लगा।

"यहां बैठे हुए तो मैं जमानत के बारे में बता नहीं सकता। कल यदि कोई आया तो पता चलेगा।"

वह चुप हो गया।

"आरिफ साहब क्यों नहीं आए ? कह तो गए थे।" थोड़ी देर बाद उसने दूसरा प्रश्न किया।

"कम्युनिस्टों पर तुम्हें वैसे भी एतबार नहीं है।" मैंने कहा।